आज के समय में सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार "बालकनामा" लिखकर प्रकाशित करने लगे।

बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाजी बच्चों का संघ

# बालकनामा

आप भी बन सकते हैं
बालकनामा अखबार का हिस्सा
1 लिखकर
2 खबरों की लीड देकर
3 आर्थिक रूप से मदद करके
बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644471
ईमेल- editorbalaknama@gmail.com

अंक-136 | सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार | जनवरी 2026 | मूल्य - 5 रूपए

# ठिठुरती ठंड में बच्चों के चेहरों पर खिली मुस्कान, जब चला चेतना का 'गर्मी की झप्पी' अभियान

**बालकनामा रिपोर्टर दीपक, काजल, नैंसी, किशन आदि**

वर्तमान में ठंड बहुत अधिक बढ़ रही है। इस बढ़ती ठंड में सड़क एवं कामकाजी बच्चे फ्लाईओवर के नीचे, सड़क के किनारे और झुग्गी बस्तियों में रहकर अपना जीवन यापन करते हैं और ठंड से कांपते रहते हैं। जब सर्दियां आती हैं और ठंड बढ़ जाती है, तो हर किसी की यही चाहत होती है कि उसे अच्छे और मोटे गर्म कपड़े मिल जाएं, जिससे ठंड से राहत मिल सके। ऐसे में चेतना संस्था के 'गर्मी की झप्पी' कार्यक्रम के माध्यम से सड़क एवं कामकाजी बच्चों को गर्म कपड़े, स्वेटर, जैकेट और जुराबें प्रदान की जा रही हैं। यह कार्यक्रम कई स्थानों जैसे गुरुग्राम, जयपुर, दिल्ली, नोएडा और लखनऊ में चलाया जा रहा है। आइए जानते हैं कि इन शहरों में रहने वाले बच्चों ने इस अभियान के बारे में क्या अनुभव साझा किए। गुरुग्राम में बढ़ती ठंड के बीच सड़क पर रहने वाले एवं कामकाजी बच्चों को सर्दी से राहत दिलाने के उद्देश्य से सामाजिक संस्था चेतना द्वारा 'गर्मी की झप्पी 3.0' अभियान का आयोजन किया गया। यह अभियान चेतना (चाइल्डहुड एनहैंसमेंट थ्रू ट्रेनिंग एंड एक्शन) के तत्वावधान में संचालित किया गया। इस पहल के अंतर्गत शहर की विभिन्न कच्ची बस्तियों में संचालित 15 वैकल्पिक शिक्षा केंद्रों से जुड़े बच्चों के साथ-साथ चारदीवारी क्षेत्र में सड़क किनारे जीवन यापन कर रहे बच्चों को गर्म जैकेट, गर्म पजामी, बनियान और जुराबें वितरित की गईं। इस अभियान के दौरान लगभग 700 बच्चों को सर्दी से बचाव के लिए गर्म कपड़े प्रदान किए गए। अभियान का उद्देश्य बच्चों को ठंड से बचाने के साथ-साथ उनमें सुरक्षा, आत्मविश्वास और देखभाल की भावना को मजबूत करना भी रहा। कार्यक्रम में विभिन्न सरकारी विद्यालयों के प्रधानाचार्य, पुलिस थाना अधिकारी, बाल संरक्षण से जुड़े प्रतिनिधि और सामाजिक कार्यकर्ताओं की सक्रिय सहभागिता रही। इस अवसर पर बच्चों के अधिकारों, सुरक्षा और शिक्षा के महत्व पर भी संवाद किया गया। सड़क किनारे रहने वाली 14 वर्षीय रानी (परिवर्तित नाम) ने जैकेट मिलने पर खुशी जताते हुए कहा, 'रात में बहुत ठंड लगती थी। अब जैकेट मिलने से ठंड से बचाव होगा। अच्छा लगता है जब कोई हमारे बारे में सोचता है।' इस अवसर पर पंच कुमार, विशेष पुलिस अधिकारी, थाना बादशाहपुर ने कहा कि सड़क और कामकाजी बच्चों के लिए समाज को सामूहिक रूप से प्रयास करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि स्कूल, पुलिस विभाग और बाल कल्याण विभाग के आपसी समन्वय से ही बच्चों को सुरक्षित और बेहतर भविष्य दिया जा सकता है। चेतना संस्था के निदेशक श्री संजय गुप्ता ने कहा, ''गर्मी की झप्पी 3.0' अभियान का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि कोई भी बच्चा ठंड और अभाव के कारण पीछे न छूटे। यह पहल समाज की सामूहिक जिम्मेदारी और बच्चों के प्रति संवेदनशीलता का प्रतीक है।' वहीं प्रोजेक्ट कोऑर्डिनेटर राजेंद्र कुमार ने कहा, 'यह अभियान केवल गर्म कपड़े वितरित करने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह बच्चों को यह भरोसा दिलाने का प्रयास है कि समाज उनके साथ खड़ा है। बच्चों के चेहरों पर आई मुस्कान हमारे लिए सबसे बड़ी उपलब्धि है।' इस अभियान को सफल बनाने में चेतना संस्था के कार्यकर्ताओं, शिक्षकों और सहयोगी विभागों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बच्चों के चेहरों पर दिखाई दी राहत और मुस्कान ने इस पहल को यादगार बना दिया। अब तक आपने गुरुग्राम के बारे में जाना, अब बात करते हैं जयपुर की। जयपुर के विभिन्न कच्ची बस्तियों में इन दिनों ठंड से बचाव के लिए चल रहे 'गर्मी की झप्पी' कार्यक्रम ने बच्चों के जीवन में खुशियों की एक नई किरण जगाई है। इस अभियान के तहत चेतना संस्था द्वारा जयपुर के 10 समुदायों में लगभग 500 सड़क एवं कामकाजी बच्चों को जैकेट और जुराबें वितरित की गईं। बालकनामा रिपोर्टर दीपक ने जयपुर की अलग-अलग बस्तियों का दौरा कर बच्चों से उनके अनुभव जाने। बच्चों ने बताया कि चेतना संस्था द्वारा हर साल की तरह इस वर्ष भी उन्हें सर्दी से बचाव के लिए जैकेट और जुराबें दी गई हैं। बच्चों ने खुशी-खुशी बताया कि ठंड के मौसम में उनके पास पर्याप्त गर्म कपड़े नहीं होते, जिससे स्कूल जाना और बाहर खेलना मुश्किल हो जाता है। 13 वर्षीय रोशन (परिवर्तित नाम) ने बताया कि जब उन्हें जैकेट और जुराबें मिलीं तो उन्हें ठंड से राहत मिली और अब वे बिना किसी परेशानी के स्कूल जा सकते हैं। कई बच्चों ने मुस्कुराते हुए कहा कि जैकेट पहनकर उन्हें बहुत अच्छा लग रहा है और ऐसा महसूस होता है कि कोई उनकी परवाह करता है। बच्चों के चेहरों पर आई यह मुस्कान इस कार्यक्रम की सफलता को दर्शाती है। 12 वर्षीय अमरिन (परिवर्तित नाम) ने बताया कि उन्हें हर साल इस कार्यक्रम का इंतजार रहता है, क्योंकि इससे उन्हें न केवल गरम कपड़े मिलते हैं बल्कि अपनापन और सुरक्षा का एहसास भी होता है। कार्यक्रम में शामिल विभिन्न स्टेकहोल्डरों ने बताया कि चेतना संस्था का यह प्रयास सराहनीय है, जो जरूरतमंद बच्चों को ठंड से बचाने के साथ-साथ उनके आत्मविश्वास को भी मजबूत करता है। लखनऊ के विभिन्न समुदायों में भी चेतना संस्था द्वारा तिरपाल और कंबल वितरण किया गया, जिससे गरीब परिवारों को ठंड में 'गर्मी की झप्पी' देने का प्रयास किया गया। लखनऊ के कुल 6 समुदायों में तिरपाल वितरण किया गया, जिसमें लगभग 152 परिवार लाभान्वित हुए। झुग्गियों को तिरपाल मिलने से उन्हें दुरुस्त किया गया ताकि ठंडी हवाओं से बच्चों को सुरक्षित रखा जा सके। इसके अलावा लखनऊ के 15 समुदायों में कुल 810 जरूरतमंद परिवारों को कंबल वितरित किए गए। जब बालकनामा रिपोर्टर नैंसी ने समुदायों का दौरा किया और लोगों से उनके अनुभव जाने, तो सदर बाजार की 11 वर्षीय किश्मतो बानो (परिवर्तित नाम) ने बताया कि ठंड में ओढ़ने के लिए उनके पास केवल दो पतली चादरें थीं, जो पर्याप्त नहीं थीं। ऐसे में संस्था द्वारा मिला कंबल उनके लिए बहुत मददगार साबित हुआ। चारबाग की 13 वर्षीय गुड़िया (परिवर्तित नाम) ने बताया कि रेलवे स्टेशन पर काम चलने के कारण उनकी झोपड़ी भी तोड़ दी गई थी और उनके पास रहने के लिए कोई उचित जगह नहीं थी। ऐसे में चेतना संस्था द्वारा दिया गया तिरपाल और कंबल उनके लिए सहारा बन गया। सचिवालय क्षेत्र की 12 वर्षीय रोजी (परिवर्तित नाम) ने बताया कि पुराना तिरपाल धूप और बारिश से खराब हो गया था, लेकिन नया तिरपाल मिलने से उनकी झोपड़ी फिर से ठीक हो गई और कंबल ने ठंड में गर्मी का एहसास दिलाया। नोएडा में भी यह कार्यक्रम जारी रहा, जहां 22 स्थानों पर लगभग

**शेष पृष्ठ 2 पर**

# आरव की बदलती दुनिया

**बालकनामा रिपोर्टर रितिका**
**बातूनी रिपोर्टर अवि**

9 साल का आरव (परिवर्तित नाम) अपने माता-पिता के साथ बंगाल से गुरुग्राम आया। बेहतर रोजगार की तलाश में आए इस परिवार को आखिरकार गुरुग्राम की जेएमडी बस्तियों में ठिकाना मिला। यहाँ जीवन आसान नहीं था। टपकती छतें, कच्ची जमीन, सीमित बिजली और पानी के लिए रोज लंबी कतारें लगाना उनकी दिनचर्या का हिस्सा था। ऐसे माहौल में बच्चों के सपने अक्सर जिम्मेदारियों के बोझ तले दब जाते हैं। आरव का बचपन भी कुछ ऐसा ही था। सुबह खेल के मैदान की ओर नहीं, बल्कि सड़कों की ओर कदम बढ़ते थे। कभी मंदिरों के बाहर हाथ फैलाना, तो कभी कबाड़ इकट्ठा करना उसकी मजबूरी बन गई थी। उसकी नन्ही हथेलियाँ उम्र से पहले ही काम की आदत सीख चुकी थीं। जब आसपास के बच्चे स्कूल की घंटी सुनकर कक्षा की ओर दौड़ते थे, तब वह परिवार की मदद के लिए दिनभर मेहनत करता था। फिर भी उसके मन में पढ़ने की इच्छा कहीं न कहीं जिंदा थी।

एक दिन चेतना संस्था की एक सामाजिक कार्यकर्ता की नजर उस पर पड़ी। बातचीत में उन्होंने महसूस किया कि यह बच्चा सीखना चाहता है, बस उसे एक मौका चाहिए। अगले ही दिन आरव को संस्था के लर्निंग

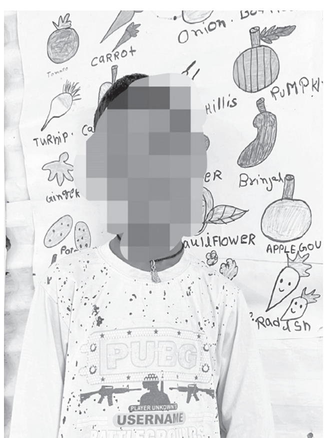

सेंटर से जोड़ दिया गया। शुरूआत में वह चुपचाप बैठा रहता था। उसे शायद भरोसा नहीं था कि पढ़ाई सच में उसकी जिंदगी का हिस्सा बन सकती है। लेकिन धीरे-धीरे किताबें उसकी दोस्त बन गईं। अक्षरों ने उसे नई दुनिया से परिचित कराया। पेंसिल ने उसे अपने मन की बात लिखना सिखाया।आज आरव रोज नहाकर साफ कपड़े पहनकर शिक्षा केंद्र आता है। वह ध्यान से पढ़ाई करता है, होमवर्क समय पर पूरा करता है और कक्षा में सवाल पूछने से भी नहीं हिचकता। उसकी आँखों में अब संकोच नहीं, बल्कि आत्मविश्वास दिखाई देता है। जब वह अपनी कॉपी में नए शब्द लिखता है, तो उसके चेहरे की मुस्कान बताती है कि शिक्षा सचमुच बदलाव ला सकती है।

आरव कहता है, 'मैं पढ़-लिखकर बड़ा इंसान बनना चाहता हूँ, ताकि मेरे माता-पिता को फिर कभी दिहाड़ी पर काम न करना पड़े।' आरव की कहानी केवल एक बच्चे की कहानी नहीं है। यह उन अनेक बच्चों की कहानी है जो कठिन परिस्थितियों में भी सपने देखना नहीं छोड़ते। सही मार्गदर्शन, सहयोग और एक अवसर उनके जीवन की दिशा बदल सकता है।

आज आरव किताबों के बीच अपना भविष्य लिख रहा है। हर पन्ने के साथ उसका आत्मविश्वास बढ़ रहा है, और हर शब्द में एक नई उम्मीद जन्म ले रही है।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

# जब बचपन जिम्मेदारियों में ही सिमट जाता है

बालकनामा रिपोर्टर दामिनी
बातूनी रिपोर्टर रीना

हाल ही में बालकनामा रिपोर्टर दामिनी ने जयपुर की खोर बस्ती का दौरा किया। वहाँ का एक दृश्य पहली नजर में सामान्य लगा, लेकिन थोड़ा ठहरकर देखने पर वह दिल को छू लेने वाला था। छोटी-छोटी लड़कियाँ, जिनकी उम्र अभी खेलकूद और पढाई की है, मिट्टी के छोटे बर्तनों में आटा गूँधती, सब्जी काटती और नन्ही-नन्ही रोटियाँ बनाती दिखाई दीं। यह सब किसी खेल जैसा लग सकता है, पर इसके पीछे छिपी सच्चाई कहीं अधिक गंभीर है। इन बच्चियों के लिए खाना बनाना कोई नया काम नहीं है। वे अपने छोटे भाई-बहनों को संभालती हैं, घर के कामों में हाथ बँटाती हैं और कई बार पूरा भोजन भी तैयार करती हैं। बचपन से ही उन्हें यह सिखाया जाता है कि घर की ज़िम्मेदारी उठाना उनका कर्तव्य है। धीरे-धीरे यही ज़िम्मेदारियाँ उनकी दिनचर्या बन जाती हैं। अभावों के बीच यही काम उनका खेल भी बन जाता है। दामिनी ने देखा कि 6 से 7 साल की बच्चियाँ खिलौनों की जगह बर्तनों से खेल रही थीं। गैस की सुविधा न होने के कारण लकड़ी और ईंटों से अस्थायी चूल्हा बनाया गया था। नन्हे हाथों में आग की आँच और चारों ओर धुआँ था। यह दृश्य बचपन की मासूमियत और जिम्मेदारियों के बोझ के बीच का फर्क साफ दिखा रहा था। जब 8 साल की रीना (परिवर्तित नाम) से बातचीत की गई, तो उसने मुस्कुराते हुए कहा, 'हमें बड़े होकर भी यही काम करना है, इसलिए अभी से सीख रहे हैं।' रीना के ये शब्द सिर्फ एक बच्ची की बात नहीं हैं। यह उस सोच का प्रतिबिंब है, जो समाज बहुत कम उम्र में ही लड़कियों के मन में बैठा देता है–कि उनका भविष्य घर की चार दीवारों तक सीमित है। इसी सोच के कारण उनके खेल, उनके सपने और उनकी उड़ान धीरे-धीरे सीमित होती चली जाती है। बस्ती की कुछ महिलाओं ने भी बताया कि संसाधनों की कमी और आर्थिक कठिनाइयों के कारण बच्चियाँ जल्दी ही घरेलू कामों में लग जाती हैं। कई बार उन्हें पढ़ाई से ज्यादा घर के काम को प्राथमिकता देनी पड़ती है। इससे उनका आत्मविश्वास और आगे बढ़ने का अवसर प्रभावित होता है। यह सिर्फ खोर बस्ती की कहानी नहीं है। यह उन अनगिनत नन्ही बेटियों की सच्चाई है, जो जिम्मेदारियों के बीच अपना बचपन बिताती हैं। जरूरत है कि परिवार, समाज और प्रशासन मिलकर ऐसी परिस्थितियाँ बनाएँ, जहाँ लड़कियाँ भी खुलकर खेल सकें, पढ़ सकें और अपने सपनों को पहचान सकें।बचपन का मतलब सिर्फ जिम्मेदारी नहीं, बल्कि सीखना, खेलना और सपने देखना भी है। अगर हम अपनी सोच में बदलाव लाएँ, तो हर रीना अपने भविष्य को खुद चुनने का हक पा सकती है–सिर्फ चूल्हे तक सीमित नहीं, बल्कि अपने सपनों की उड़ान तक।

# पतंगों के बीच जिम्मेदारियों में उलझा बचपन

बालकनामा रिपोर्टर दामिनी
बातूनी रिपोर्टर रिया

संक्राति के अवसर पर जब बस्ती के बच्चे हँसी-खुशी पतंग उड़ाने में मग्न थे, उसी दौरान एक ऐसी सच्चाई सामने आई जिसने बचपन की मासूमियत पर सवाल खड़े कर दिए। मानसिंहपुरा बस्ती के भ्रमण के दौरान बालकनामा रिपोर्टर दामिनी ने एक 10 वर्षीय बालिका को देखा, जिसके हाथ में लगभग 30 से 35 पतंगें थीं और वह बच्चों को पतंगें बेच रही थी। बातचीत करने पर उसने अपना नाम रिया (परिवर्तित नाम) बताया। रिया ने बताया कि वह पतंगें 5 या 10 रुपये में बेचती है और उनकी आकृति व स्थिति के अनुसार कीमत तय करती है। जब उससे पूछा गया कि वह पतंगें कहां से लाती है, तो उसने बताया कि वह पतंगें खरीदती नहीं है, बल्कि अपने भाई-बहनों के साथ मिलकर उड़ती हुई पतंगों को पकड़ लेती है। बस्ती के आसपास पतंग की कोई दुकान नहीं होने के कारण उसकी पतंगें आसानी से बिक जाती हैं। अपनी पारिवारिक स्थिति के बारे में बताते हुए रिया ने कहा कि उसके पिताजी का स्वर्गवास हो चुका है और उसकी मां जीरा बेचने की फेरी लगाती हैं, लेकिन आमदनी इतनी नहीं है कि परिवार का खर्च ठीक से चल सके। घर में उसके बूढ़े नाना-नानी भी रहते हैं, जिनमें नाना विकलांग हैं, जिससे परिवार की जिम्मेदारियाँ और बढ़ गई हैं। रिया का आधार कार्ड बना हुआ है और वह कुछ समय के लिए स्कूल भी गई थी, लेकिन घर की परिस्थितियों के कारण उसकी पढ़ाई छूट गई। छोटी बहन की देखभाल, घर के काम और नाना की स्थिति के चलते परिवार ने उसे स्कूल भेजना बंद कर दिया। अब वह पतंग बेचकर जो भी पैसे कमाती है, वह अपनी मां को दे देती है ताकि घर का खर्च चल सके। रिया ने बताया कि कई बार पतंग पाने के लिए उसे पेड़ पर चढ़ना पड़ता है और डंडे की मदद से पतंग उतारनी पड़ती है, इस उम्मीद में कि पतंग फटी न हो और बेचने लायक बच जाए। उसके लिए हर साबुत पतंग उम्मीद की एक नई डोर है। संक्राति जैसे खुशी के पर्व पर, जहां एक ओर बच्चे उत्सव का आनंद ले रहे थे, वहीं रिया जैसी बच्ची मजबूरी में अपना बचपन जिम्मेदारियों के हवाले कर रही थी। यह खबर केवल एक बच्ची की नहीं, बल्कि उन अनेक बच्चों की सच्चाई है, जिनका बचपन परिस्थितियों के कारण समय से पहले बड़ा हो जाता है।

# ज़िम्मेदारियों के बीच नहीं रुकी पढ़ाई, कमला नेहरू कैंप के बच्चों की बड़ी कामयाबी

बालकनामा रिपोर्टर आसिफ

पश्चिमी दिल्ली के कमला नेहरू कैंप में रहने वाले कई बच्चे इस वर्ष दसवीं बोर्ड की परीक्षा देने जा रहे हैं। बालकनामा रिपोर्टर आसिफ ने जब इन बच्चों से बातचीत की, तो एक प्रेरणादायक बात सामने आई। बच्चों ने बताया कि अक्सर घर की जिम्मेदारियों और आर्थिक मजबूरियों के कारण सड़क एवं कामकाजी बच्चों की पढ़ाई बीच में ही छूट जाती है, लेकिन अब धीरे-धीरे बच्चों और उनके परिवारों को यह समझ आने लगा है कि शिक्षा कितनी महत्वपूर्ण है। घर के काम करना, पानी लाना, छोटे भाई-बहनों की देखभाल करना और आर्थिक दबाव झेलना इनके दैनिक जीवन का हिस्सा है, फिर भी इन बच्चों ने पढ़ाई जारी रखी और अब बोर्ड परीक्षा तक पहुँच गए हैं। ये अपने परिवार की पहली पीढ़ी के बच्चे हैं जो इतनी कठिन परिस्थितियों के बावजूद इस मुकाम तक पहुँच पाए हैं। बालकनामा रिपोर्टर आसिफ से बातचीत के दौरान 15 वर्षीय सुनील (परिवर्तित नाम) ने कहा, 'मैं अपने परिवार का पहला बच्चा हूँ जो दसवीं की परीक्षा दे रहा हूँ। मैं बहुत खुश हूँ और आगे भी पढ़ाई करना चाहता हूँ।' वहीं अनु (परिवर्तित नाम) ने अपनी कहानी साझा करते हुए बताया, 'मेरी माँ मुझे पढ़ाना नहीं चाहती थीं, इसलिए मैं अपनी नानी के घर आकर पढ़ाई कर रही हूँ। मुझे बहुत खुशी है कि मैं दसवीं का पेपर दे रही हूँ। मुझे तो लगता था कि मैं कभी पढ़ नहीं पाऊँगी।' इन बच्चों ने बताया कि चेतना संस्था के सहयोग और मार्गदर्शन से उन्हें पढ़ाई जारी रखने की प्रेरणा और सहायता मिली, जिसके कारण वे आज इस मुकाम तक पहुँच सके हैं। इनकी यह उपलब्धि साबित करती है कि यदि थोड़ा सहयोग, मार्गदर्शन और अवसर मिले, तो झुग्गियों में रहने वाले कामकाजी बच्चे भी अपने सपनों को साकार कर सकते हैं। कमला नेहरू कैंप के बच्चों की इच्छा है कि सरकार और समाज उनकी शिक्षा में सहयोग करें, ताकि वे आगे चलकर अपने परिवार और समाज दोनों का भविष्य बेहतर बना सकें।

## ठिठुरती ठंड में बच्चों के चेहरों पर खिली मुस्कान, जब चला चेतना का 'गर्मी की झप्पी' अभियान

**पृष्ठ 1 का शेष**

1600 परिवारों और बच्चों को गर्म कंबल वितरित किए गए। बेलूरपुर में रहने वाली 12 वर्षीय दामिनी (परिवर्तित नाम) ने बताया कि उनके घर में आठ सदस्य हैं और उनके पास केवल दो पतले कंबल थे। अब नए कंबल मिलने से उन्हें ठंड से बचने में काफी मदद मिलेगी। वहीं सेक्टर-76 में रहने वाले 11 वर्षीय कवि (परिवर्तित नाम) ने बताया कि कई बार वे कंबल खरीदना चाहते हैं, लेकिन पैसे नहीं जुटा पाते। ऐसे में जब कोई संस्था उनकी मदद करती है तो उन्हें बहुत खुशी होती है। इस तरह 'गर्मी की झप्पी' कार्यक्रम वास्तव में बच्चों के लिए स्नेह, सहयोग और संवेदनशीलता का प्रतीक बनकर सामने आया है। बच्चों के चेहरों पर आई मुस्कान यह बताती है कि समाज के छोटे-छोटे प्रयास भी उनके जीवन में बड़ी खुशियां ला सकते हैं।

# शौचालय टूटे, बस्ती के बच्चों की बढ़ीं मुश्किलें

बालकनामा रिपोर्टर दीपक,
बातूनी रिपोर्टर संदीप

बालकनामा रिपोर्टर दीपक ने जब जयपुर की प्रेमनगर कच्ची बस्ती का दौरा किया, तो वहाँ एक गंभीर और चिंताजनक स्थिति सामने आई। स्थानीय लोगों ने बताया कि नगर निगम द्वारा बस्ती में बने शौचालयों को तोड़ दिया गया है। अधिकारियों के अनुसार ये शौचालय अवैध भूमि पर बने थे, जिसके कारण उन्हें हटाया गया। हालाँकि शौचालय तो हटा दिए गए, लेकिन उनके स्थान पर कोई वैकल्पिक व्यवस्था नहीं की गई। इस कारण बस्ती के लोगों, विशेष रूप से बच्चों और महिलाओं को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। दौरे के दौरान बातूनी रिपोर्टर संदीप ने बच्चों, अभिभावकों और स्थानीय निवासियों से विस्तार से बातचीत की। लोगों ने बताया कि पहले बस्ती में बने शौचालयों से उन्हें काफी सुविधा थी। बच्चे स्कूल जाने से पहले और रात के समय सुरक्षित तरीके से उनका उपयोग कर लेते थे। अब शौचालय न होने के कारण सभी को खुले में शौच के लिए जाना पड़ रहा है। बच्चों ने बताया कि सुबह जल्दी या रात के अंधेरे में बाहर

जाना उनके लिए डर और असुरक्षा का कारण बन गया है। कई बच्चे साँप, कुत्तों या अन्य खतरों से डरते हैं। कुछ बच्चों ने यह भी कहा कि वे पानी कम पीते हैं, ताकि उन्हें बार-बार बाहर न जाना पड़े। इसका असर उनके स्वास्थ्य पर पड़ रहा है।14 वर्षीय बालिका जनत (परिवर्तित नाम) ने कहा, 'हमें बहुत शर्म आती है। कई बार हमें समूह में जाना पड़ता है, ताकि थोड़ा सुरक्षित महसूस हो। स्कूल जाने से पहले ही चिंता होने लगती है कि शौच के लिए कहाँ जाएँगे।' अन्य बालिकाओं ने भी बताया कि खुले में शौच जाने से उन्हें असहज और असुरक्षित महसूस होता है। इससे उनकी निजता प्रभावित होती है और कई बार वे देर तक रोककर बैठी रहती हैं, जिससे स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ होने का डर रहता है। अभिभावकों ने अपनी चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि यदि अवैध निर्माण हटाना आवश्यक था, तो शौचालय तोड़ने से पहले या तुरंत बाद वैकल्पिक व्यवस्था की जानी चाहिए थी। उनका कहना है कि बच्चों की बुनियादी जरूरतों को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। स्थानीय निवासियों का मानना है कि स्वच्छता और स्वास्थ्य हर नागरिक का अधिकार है। शौचालय जैसी मूलभूत सुविधा का अभाव बच्चों की गरिमा, सुरक्षा और शिक्षा पर सीधा प्रभाव डालता है। जब बच्चे असुविधा और चिंता में रहते हैं, तो उनका मन पढ़ाई में भी ठीक से नहीं लग पाता। यह स्थिति कई महत्वपूर्ण सवाल खड़े करती है। क्या संबंधित विभाग जल्द ही अस्थायी या स्थायी शौचालय की व्यवस्था करेगा। क्या बच्चों और महिलाओं की सुरक्षा को प्राथमिकता दी जाएगी। प्रेमनगर कच्ची बस्ती के बच्चों की मांग साफ है। वे सुरक्षित, स्वच्छ और सम्मानजनक शौचालय सुविधा चाहते हैं, ताकि बिना डर और शर्म के अपनी दिनचर्या पूरी कर सकें। बालकनामा के माध्यम से बस्ती के बच्चों ने प्रशासन से अपील की है कि उनकी समस्या को गंभीरता से लिया जाए और जल्द समाधान किया जाए। स्वच्छता केवल सुविधा नहीं, बल्कि स्वास्थ्य, सुरक्षा और सम्मान से जुड़ा मुद्दा है।



बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

# बिना लाइट के मोमबत्ती जलाकर करते हैं गुजारा

**बातूनी रिपोर्टर सुनीत व रिपोर्टर किशन**

क्या आप बिना उजाले के रात गुजार सकते हैं? घर में थोड़ी देर के लिए भी बिजली चली जाए तो हम परेशान हो जाते हैं, लेकिन सड़क और कामकाजी बच्चे गरीबी में किस तरह बस्तियों में बिना बिजली के अपना जीवन गुजारते हैं, यह एक गंभीर सवाल है। नोएडा सेक्टर 14 ए के पास स्थित एक बस्ती में जब पत्रकारों ने दौरा किया, तो वहाँ बिजली की बड़ी समस्या सामने आई। बस्ती में रहने वाले लोगों के घरों में नियमित बिजली की व्यवस्था नहीं है। 13 वर्षीय बाबू (परिवर्तित नाम) ने बताया कि बस्ती में एक झुग्गी का किराया लगभग 1200 रुपये महीना है और अधिकतर लोग यहाँ इसलिए रहते हैं क्योंकि आसपास काम मिल जाता है तथा किराया अपेक्षाकृत कम है, लेकिन बिजली की सुविधा न होने के कारण उन्हें कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। बाबू ने बताया कि जब रोशनी नहीं होती तो वे पास की दुकानों से मोमबत्ती लाकर घर में उजाला करते हैं। बाद में उन्होंने देखा कि कुछ लोग सूर्य प्लेट और बड़ी बैटरी का उपयोग कर रहे हैं, इसलिए उन्होंने भी बाजार से सूर्य प्लेट और बैटरी खरीदी और उसे धूप में चार्ज करके रात में थोड़ी रोशनी का इंतजाम करने लगे। हालांकि सर्दियों में यह भी आसान नहीं है, क्योंकि धुंध

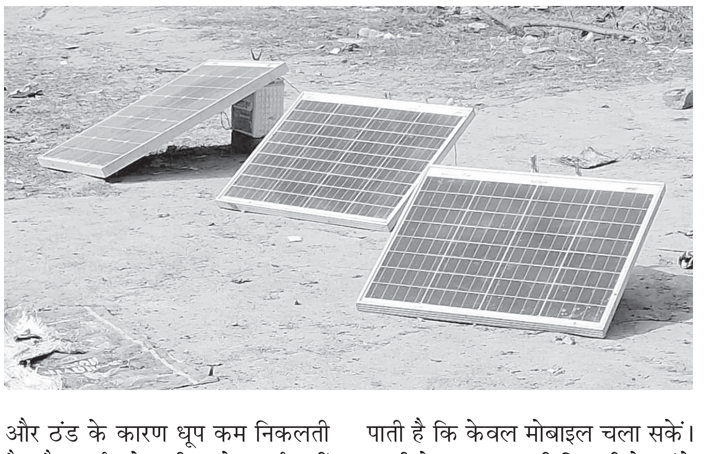

और ठंड के कारण धूप कम निकलती है और सूर्य प्लेट ठीक से चार्ज नहीं हो पाती। कई बार इतनी ही चार्ज हो पाती है कि केवल मोबाइल चला सकें। बस्ती के पास सरकारी बिजली के खंभे मौजूद हैं, लेकिन वहाँ से बिजली लेना संभव नहीं है, क्योंकि आसपास पुलिस की निगरानी रहती है और ठेकेदार भी अवैध कनेक्शन लेने की अनुमति नहीं देता। लोगों को डर रहता है कि यदि ऐसा किया तो कार्रवाई हो सकती है, इसलिए वे जोखिम नहीं उठाते और सूर्य प्लेट के सहारे ही रोशनी का बंदोबस्त करते हैं। बिजली की कमी का असर बच्चों की पढ़ाई पर भी पड़ रहा है, क्योंकि अंधेरे में पढ़ाई करना कठिन होता है और कई बार उन्हें जल्दी सोना पड़ता है। रोशनी की यह समस्या केवल सुविधा का विषय नहीं, बल्कि बच्चों की शिक्षा और भविष्य से जुड़ा गंभीर मुद्दा है, जिस पर ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है।

# साइकिल वितरण योजना के तहत कक्षा 9 की छात्राओं को मिली साइकिल, चेहरों पर दिखी खुशी

**बालकनामा रिपोर्टर:दामिनी**
**बातूनी रिपोर्टर:अर्पिता**

बालकनामा की रिपोर्टर दामिनी ने जयपुर की अलग-अलग बस्तियों का दौरा किया। इस दौरान उन्होंने देखा कि कई बालिकाएँ एक जैसी नई साइकिलें लेकर जा रही थीं। यह देखकर उनके मन में जिज्ञासा हुई। उन्होंने बालिकाओं से बात की और उनके अनुभव जानने की कोशिश की। बातचीत में पता चला कि सरकारी विद्यालयों में कक्षा 9 में पढ़ने वाली छात्राओं को मुख्यमंत्री बालिका साइकिल योजना के अंतर्गत साइकिलें वितरित की गई हैं। बालिकाओं से बात करने पर उनके चेहरों पर खुशी और उत्साह साफ दिखाई दे रहा था। उन्होंने बताया कि वे काफी समय से इस योजना का इंतजार कर रही थीं। साइकिल मिलने के बाद अब उनके लिए स्कूल जाना पहले से कहीं ज्यादा आसान हो जाएगा। कई बालिकाएँ अपनी नई साइकिल को संभालकर चला रही थीं और अपने दोस्तों के साथ खुशी-खुशी घर लौट रही थीं। नीना (परिवर्तित नाम), उम्र 14 वर्ष ने बताया कि वह काफी समय से साइकिल मिलने का इंतजार कर रही थी। उसका स्कूल घर से काफी दूर है और कई बार किराए के पैसे न होने की वजह से स्कूल जाना मुश्किल हो

जाता था। उसने बताया कि कई बार उसे छाजले बनाकर किराए के लिए पैसे जुटाने पड़ते थे। अब साइकिल मिलने के बाद वह रोज समय पर स्कूल जा सकेगी और मन लगाकर पढ़ाई कर पाएगी।

इसी तरह भावना (परिवर्तित नाम), उम्र 13 वर्ष ने भी अपनी खुशी जाहिर की। उसने बताया कि साइकिल मिलने से उसे बहुत अच्छा लग रहा है। अब उसके माता-पिता को रोज किराए की चिंता नहीं करनी पड़ेगी और वह आसानी से स्कूल जाकर अपनी पढ़ाई जारी रख सकेगी। गणेशपुरी समुदाय में पढ़ने वाली अन्य बालिकाओं ने भी अपने अनुभव साझा किए। उन्होंने बताया कि साइकिल मिलने से उनका समय बचेगा और वे पहले से ज्यादा सुरक्षित और आत्मनिर्भर महसूस कर रही हैं। लाभार्थी ने बताया कि अब उन्हें स्कूल आने-जाने के लिए किसी पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा। वे खुद साइकिल से स्कूल आ-जा सकेंगी, जिससे उनका आत्मविश्वास भी बढ़ा है और आगे पढ़ाई करने की प्रेरणा भी मिली है। इस अवसर पर विद्यालय में एक छोटा कार्यक्रम भी आयोजित किया गया, जिसमें क्षेत्र के पार्षद और विधायक भी उपस्थित रहे। उन्होंने छात्राओं को साइकिलें वितरित कीं और उन्हें शिक्षा का महत्व समझाते हुए आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। साइकिल वितरण योजना का प्रभाव केवल कक्षा 9 की छात्राओं तक ही सीमित नहीं है। छोटी कक्षाओं में पढ़ने वाली बालिकाएँ भी इससे प्रेरित हो रही हैं। वे भी बड़ी कक्षा में पहुँचकर आगे पढ़ाई जारी रखने के लिए उत्साहित दिखाई देती हैं। इस तरह मुख्यमंत्री बालिका साइकिल योजना बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित हो रही है।

# संघर्ष के बीच भी ज़िंदा है मासूम का सपना

**बातूनी रिपोर्टर मोहित**
**बालकनामा रिपोर्टर अमृत**

बालकनामा रिपोर्टर अमृत ने हाल ही में दिल्ली की एक कच्ची बस्ती का दौरा किया, जहाँ उन्होंने 13 वर्षीय मोहित (परिवर्तित नाम) का संघर्ष देखा, जो कम उम्र में ही जीवन की कठोर सच्चाइयों का सामना करते हुए अपने परिवार का सहारा बन रहा है।

दौरे के दौरान अमृत ने उसे एक दुकान पर चाय की केतली धोते हुए देखा। बातचीत में उसने बताया, 'हमारे पास ज्यादा पैसे नहीं हैं। मेरी माँ फैक्ट्री में काम करती हैं और उन्हें लगभग 6000 रुपये महीना मिलता है। उसमें से घर का किराया देना पड़ता है और जो थोड़ा बहुत बचता है, उससे राशन लाया जाता है। इतने पैसों में घर चलाना बहुत मुश्किल होता है।' उसने आगे कहा, 'इसी वजह से मैंने दुकान पर काम करना शुरू किया। मुझे जो भी पैसे मिलते हैं, मैं अपनी माँ को दे देता हूँ, ताकि घर की जरूरतें पूरी हो सकें।' जब रिपोर्टर ने उसकी पढ़ाई के बारे में पूछा, तो उसकी आवाज में छिपी पीड़ा साफ महसूस हो रही थी। उसने बताया, 'मेरा स्कूल में नामांकन हुआ था, लेकिन घर की आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण मुझे स्कूल छोड़ना पड़ा।' कठिन परिस्थितियों के बावजूद

उसका सपना अभी भी जिंदा है। उसने उम्मीद भरे शब्दों में कहा, 'मैं चाहता हूँ कि मेरा फिर से स्कूल में दाखिला हो जाए। मैं अच्छी पढ़ाई करके आगे चलकर अच्छी नौकरी करना चाहता हूँ, ताकि अपने परिवार की मदद कर सकूँ।'

यह कहानी केवल एक मासूम बच्चे के संघर्ष की नहीं है, बल्कि उन अनेक बच्चों की सच्चाई को दशार्ती है, जो आर्थिक मजबूरियों के कारण पढ़ाई छोड़ने पर मजबूर हो जाते हैं, फिर भी अपने सपनों को दिल में संजोए रखते हैं। सही सहयोग और अवसर मिलने पर ऐसे बच्चे अपने जीवन की दिशा बदल सकते हैं और अपने सपनों को साकार कर सकते हैं।

# लकड़ी और स्केटिंग के पहियों से बनी ट्रॉली बच्चों के आई काम

**बातूनी रिपोर्टर रिया व रिपोर्टर किशन**

कहते हैं कि हमारे भारत में टैलेंट की कमी नहीं है, और यह बात सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने एक बार फिर साबित कर दी है। नोएडा सेक्टर 15 के नजदीक स्थित एक बस्ती में जब पत्रकारों ने दौरा किया, तो उन्होंने देखा कि कई बच्चे लकड़ी और स्केटिंग के पहियों से बनी एक छोटी ट्रॉली पर सामान रखकर उसे खींचते हुए घूम रहे थे और उसी में पानी के बर्तन भी ला रहे थे। यह दृश्य देखने के बाद पत्रकारों ने जानने का प्रयास किया कि यह अनोखा तरीका कैसे और क्यों अपनाया गया। बस्ती में रहने वाली 13 वर्षीय एक बालिका सुमन (परिवर्तित नाम) ने बताया कि उनकी बस्ती में लगभग 80 से अधिक झुग्गियाँ हैं, लेकिन पानी की बहुत बड़ी समस्या है। पानी लेने के लिए आधा किलोमीटर दूर जाना पड़ता है और बर्तन सिर पर या हाथ में उठाकर लाने में काफी परेशानी होती है। कई बार बर्तन गिर जाते हैं और टूट जाते हैं, जिससे नुकसान भी होता है। इसी समस्या का समाधान खोजने के लिए बच्चों ने मिलकर एक नया तरीका निकाला। बस्ती में अधिकतर लोग कबाड़ का काम करते हैं, इसलिए उन्हें लकड़ी की प्लाई, पुराने स्केटिंग के पहिए और कील आसानी से मिल गए। बच्चों ने एक बड़ी प्लाई ली, उसके नीचे चारों कोनों पर स्केटिंग के पहिए कील से मजबूती से लगा दिए और आगे की ओर एक मजबूत रस्सी बांध दी, ताकि उसे खींचा जा सके। इस तरह एक छोटी ट्रॉली तैयार हो गई। शुरूआत में बच्चों ने इसका उपयोग किया और जब यह तरीका सफल रहा, तो बड़ों ने भी इसे अपनाना शुरू कर दिया। अब बस्ती के अधिकतर लोग अपनी-अपनी ट्रॉली बनाकर पानी लाने के लिए उसी का इस्तेमाल करते हैं। बच्चों ने बताया कि बस्ती में पानी की कोई स्थायी व्यवस्था नहीं है, इसलिए उन्हें पास के एक मंदिर तक जाना पड़ता है, जहाँ एक नल लगा हुआ है। उस नल के मालिक को हर परिवार को 200 रुपये प्रति माह देने पड़ते हैं। पानी दिन में केवल दो घंटे ही मिलता है, एक घंटा सुबह और एक घंटा शाम। यदि उसी समय में पानी भर लिया तो ठीक, वरना इंतजार करना पड़ता है। ऐसे में ट्रॉली से पानी लाना आसान हो गया है और कम मेहनत में ज्यादा पानी लाया जा सकता है। बच्चों की यह समझदारी और मेहनत यह दिखाती है कि कठिन परिस्थितियों में भी वे हार नहीं मानते, बल्कि अपने हुनर और सूझबूझ से समस्याओं का हल ढूंढ लेते हैं।

**CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS**

**CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.**

**Child line Number**
**1098**
**Police Helpline Number**
**100**

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

# गणतंत्र दिवस पर विद्यालयों में बच्चों की सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ, मुख्य अतिथियों और मीडिया ने की सराहना

**बालकनामा रिपोर्टर दामिनी**
**बातूनी रिपोर्टर पलक**

बालकनामा रिपोर्टर ने जयपुर के विभिन्न विद्यालयों और चेतना संस्था द्वारा संचालित वैकल्पिक शिक्षा केंद्रों में 26 जनवरी के अवसर पर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रमों को लेकर बच्चों से बातचीत की, जिसमें बच्चों ने उत्साहपूर्वक अपने अनुभव साझा करते हुए बताया कि इस बार का गणतंत्र दिवस उनके लिए बेहद खास और यादगार रहा।

बच्चों ने जानकारी दी कि, राजकीय विद्यालयों में गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए और इसी क्रम में महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय, जयसिंहपुरा खोर में भी भव्य आयोजन हुआ, जिसमें वार्ड के पार्षद को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था। विद्यालय परिसर को सजाया गया था और बच्चों में विशेष उत्साह देखने को मिला। पहली बार एक जैसी वेशभूषा पहनकर मंच पर प्रस्तुति देने का अवसर मिलने से बच्चे बेहद खुश थे।

11 वर्षीय बालिका शीला (परिवर्तित नाम) ने बताया कि इसी वर्ष उसका विद्यालय में प्रवेश हुआ है और पहली बार उसे मंच पर समान ड्रेस पहनकर गणेश वंदना पर नृत्य करने का अवसर मिला, जिससे उसका आत्मविश्वास बढ़ा और उसे बहुत खुशी महसूस हुई। कार्यक्रम के दौरान बच्चों ने बाल श्रम जैसे गंभीर विषयों पर आधारित गीत प्रस्तुत कर समाज को जागरूक करने का संदेश दिया, वहीं कुछ बच्चे फौजी की वेशभूषा में देशभक्ति गीतों पर नृत्य करते दिखाई दिए, जिससे वातावरण देशप्रेम से भर गया और दर्शकों ने तालियों से उनका उत्साह बढ़ाया। 13 वर्षीय पलक (परिवर्तित नाम) ने बताया कि उसे मंच पर उपस्थित मुख्य अतिथियों के स्वागत का अवसर मिला, जहाँ उसने तिलक लगाकर और माला पहनाकर उनका अभिनंदन किया, जो उसके लिए गर्व का क्षण था। बच्चों ने यह भी साझा किया कि मीडिया कर्मियों ने उनके कार्यक्रम की कवरेज की और समाचारों में उनकी प्रस्तुति दिखाई गई, जिससे उनका उत्साह और बढ़ गया। बच्चों का कहना है कि ऐसे कार्यक्रम उन्हें अपनी प्रतिभा दिखाने, मंच पर बोलने और आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं, और इस वर्ष का गणतंत्र दिवस उनके लिए सीख, खुशी और गर्व से भरा अनुभव साबित हुआ।

# टूटी सड़क से बच्चों की सुरक्षा पर खतरा

**बालकनामा रिपोर्टर अमृत ,**
**बातूनी रिपोर्टर अंशु**

पश्चिम दिल्ली में रहने वाले आर्यन (परिवर्तित नाम) ने बताया कि उनके क्षेत्र की सड़क कई जगह से टूटी और उखड़ी हुई है, जिसके कारण बच्चों को स्कूल आने-जाने में काफी परेशानी होती है। सड़क पर जगह-जगह गड्ढे हैं और बारिश या नालियों के पानी के कारण वहाँ कीचड़ जमा हो जाता है। यदि कोई बच्चा सड़क के किनारे खड़ा हो या वहाँ से गुजर रहा हो, तो गुजरती हुई गाड़ियाँ उसे कीचड़ से भिगोकर चली जाती हैं। साइकिल से स्कूल जाने वाले बच्चों को तो और अधिक दिक्कत होती है, क्योंकि उन्हें साइकिल रोककर सावधानी से किनारे-किनारे निकालना पड़ता है। आर्यन ने बताया कि सड़क पर जमा पानी पास की खुली

नालियों और बकेट की नाली से आता है। स्थानीय निवासी रहीम (परिवर्तित नाम) ने जानकारी दी कि यह सड़क एक-दो बार बन चुकी है, लेकिन नालियों के पानी की निकासी ठीक न होने के कारण दोनों बार सड़क फिर से टूट गई। उन्होंने बताया कि नालियाँ कई-कई महीनों तक साफ नहीं होतीं, जिससे पानी सड़क पर फैल जाता है और गड्ढे बन जाते हैं। रहीम ने यह भी कहा कि कई बार गाड़ियाँ इन गड्ढों में फँस जाती हैं और उनमें बैठे स्कूल के बच्चों को परेशानी होती है। एक बार तो एक रिक्शा भी गड्ढे में फँसकर पलट गया था। सौभाग्य से उस समय रिक्शा में ड्राइवर के अलावा कोई बच्चा नहीं था और चालक को केवल हल्की चोट आई। क्षेत्र के बच्चों और अभिभावकों ने सरकार से निवेदन किया है कि सड़क की मरम्मत कराई जाए और नालियों को ढककर या ठीक तरीके से बनवाया जाए, ताकि पानी बाहर न फैले और सड़क बार-बार खराब न हो। उनका कहना है कि सुरक्षित सड़क और साफ नालियाँ बच्चों की सुरक्षा के लिए बेहद आवश्यक हैं।

# औद्योगिक भ्रमण ने छात्रों को दी नई समझ और अनुभव

**रिपोर्टर- प्रीति**

दिल्ली के एन-86 समुदाय में दौरे के दौरान बालकनामा पत्रकारों की मुलाकात 16 वर्षीय बालक एहसान (परिवर्तित नाम) से हुई। बातचीत के दौरान एहसान ने बताया कि वह सर्वोदय बाल विद्यालय, केशवपुरम (दिल्ली) में पढ़ता है। हाल ही में उसके विद्यालय की ओर से छात्रों को दिल्ली के बवाना औद्योगिक क्षेत्र में स्थित एक कंपनी में औद्योगिक भ्रमण (इंडस्ट्रियल विज़िट) के लिए ले जाया गया था। इस भ्रमण का मुख्य उद्देश्य छात्रों को केवल किताबों तक सीमित न रखकर उन्हें वास्तविक जीवन में होने वाले कार्यों और उद्योगों के माहौल से परिचित कराना था। एहसान ने बताया कि उनके साथ विद्यालय की चार टीमें भी बवाना गई थीं।एहसान ने बताया कि उन्होंने बवाना की एक बड़ी कंपनी का दौरा किया, जहाँ इलेक्ट्रॉनिक मदरबोर्ड बनाए जाते हैं। इस दौरान छात्रों को यह समझने का अवसर मिला कि इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के महत्वपूर्ण हिस्से किस तरह तैयार किए जाते हैं, मशीनों और कर्मचारियों की क्या भूमिका होती है और पूरी उत्पादन प्रक्रिया किस तरह से संचालित होती है। इस अनुभव से छात्रों को तकनीकी क्षेत्र के बारे में व्यावहारिक जानकारी मिली और उन्हें उद्योगों में होने वाले काम को करीब से देखने का मौका भी मिला। एहसान ने यह भी बताया कि इस कंपनी की एक खास बात यह है कि यहाँ 12वीं पास महिलाएँ भी काम कर सकती हैं। कंपनी महिलाओं को रोजगार देने पर विशेष ध्यान देती है और उन्हें आत्मनिर्भर बनने के अवसर प्रदान करती है। महिलाओं की भागीदारी से न केवल कंपनी का कार्य सुचारू रूप से चलता है, बल्कि समाज में लैंगिक समानता को भी बढ़ावा मिलता है। एहसान के अनुसार इस दौरे से उसे यह समझने में मदद मिली कि बड़ी कंपनियाँ केवल उत्पादन और मुनाफे तक सीमित नहीं होतीं, बल्कि वे समाज के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

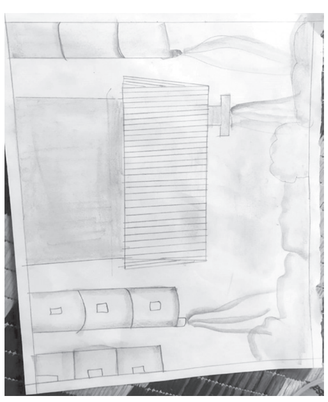

जब महिलाओं को रोजगार मिलता है तो उनकी आर्थिक स्थिति मजबूत होती है, जिससे वे अपने परिवार का बेहतर तरीके से पालन-पोषण कर पाती हैं। इसका सकारात्मक प्रभाव उनके बच्चों, परिवार और अंततः पूरे समाज पर पड़ता है। एहसान ने बताया कि यह अनुभव उसके लिए बेहद सीख देने वाला और यादगार रहा। इस भ्रमण ने उसे यह सोचने के लिए प्रेरित किया कि भविष्य में वह भी पढ़ाई के साथ-साथ ऐसा काम करना चाहेगा जो समाज के लिए उपयोगी हो।

# छोटी उम्र में नशे की लत का शिकार हो रहे बच्चे

**बालकनामा रिपोर्टर फारूक**

बालकनामा के रिपोर्टर फारूख हुसैन ने जब गुरुग्राम के वजीराबाद सेक्टर 52 स्थित अपने क्षेत्र का दौरा किया, तो उन्हें एक बेहद चिंताजनक स्थिति देखने को मिली। इलाके में लगभग 10 वर्ष का एक बच्चा, राहुल (परिवर्तित नाम), नशा करता हुआ पाया गया। फारूख ने जब राहुल से बातचीत की और पूछा कि वह नशा क्यों करता है, तो उसने बताया कि यह उसकी आदत बन चुकी है। आगे बातचीत में राहुल ने बताया कि एक दिन वह पास के बांध पर घूम रहा था। उसी दौरान कुछ बड़े बच्चों ने उसे पकड़ लिया और डराकर जबरदस्ती नशा कराया। उस घटना के बाद से उसे नशे की लत लग गई। जब उससे पूछा गया कि वह नशे के लिए पैसे कहाँ से लाता है, तो राहुल ने बताया कि उसके माता-पिता उसे खाने-पीने की चीजों के लिए पैसे देते हैं, लेकिन वह उन्हीं पैसों से नशा खरीद लेता है।

फारूख ने यह भी पूछा कि क्या उसे पता है कि नशा करने से शरीर और स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है। राहुल ने कहा कि उसे पता है कि नशे से कई बीमारियाँ हो सकती हैं, लेकिन अब वह चाहकर भी इस आदत को छोड़ नहीं पा रहा है। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए फारूख ने बच्चे के माता-पिता से बात की। उनकी सहमति से राहुल को काउंसलिंग के लिए ऐसे अस्पताल ले जाया गया, जहाँ नशा छुड़ाने का इलाज किया जाता है। यह घटना बताती है कि कम उम्र के बच्चे भी गलत संगति और दबाव के कारण नशे की चपेट में आ सकते हैं। समय रहते जागरूकता, संवाद और सही मार्गदर्शन से बच्चों को इस खतरे से बचाया जा सकता है।

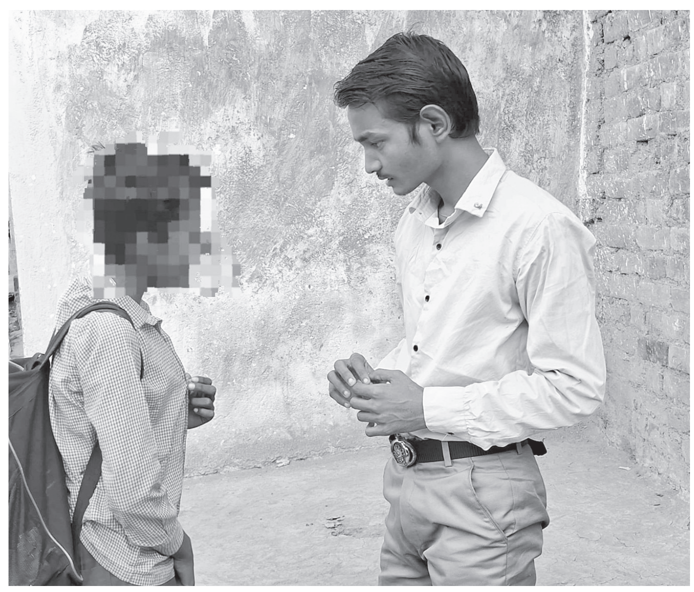

# नाराजगी के साथ बच्चों ने बताई अपनी बात

**ब्यूरो रिपोर्ट**

काम कई प्रकार के होते हैं। बच्चे घर में भी अपने माता-पिता की मदद करते हुए घरेलू काम करते हैं, लेकिन यह भी महत्वपूर्ण है कि बच्चे किस जगह और किस प्रकार का काम कर रहे हैं। नोएडा सेक्टर-78 की एक बस्ती में जब बालकनामा के पत्रकार बच्चों से मिलने पहुंचे, तो उन्होंने यह जानने की कोशिश की कि बच्चे नियमित रूप से स्कूल जा रहे हैं या नहीं।

बस्ती में रहने वाले 11 वर्षीय चीकू (परिवर्तित नाम) ने बताया कि वह उस दिन स्कूल नहीं जा पाया क्योंकि उसके स्कूल के कपड़े गंदे हो गए थे। जब उससे कपड़े गंदे होने का कारण पूछा गया तो उसने थोड़ा नाराज होकर बताया कि वह पास के गांव के एक सरकारी स्कूल में पढ़ने जाता है और इस समय पांचवीं कक्षा में पढ़ाई कर रहा है।

चीकू ने बताया कि उनके स्कूल में कुछ ऐसे नियम बनाए गए हैं, जिनके कारण बच्चों को परेशानी होती है। उसने कहा कि वह स्कूल का नाम साझा नहीं कर सकता, लेकिन वहां सफाई के लिए कोई कर्मचारी नहीं है। इसी कारण उनकी कक्षा अध्यापिका ने

**शेष पृष्ठ 8 पर**



बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

# छोटी बात पर बढ़ा विवाद, चाकू से हमला

**ब्यूरो रिपोर्ट**

कभी-कभी छोटी-सी गलती या बात को लोग इतना बड़ा बना देते हैं कि उसका परिणाम बहुत गंभीर हो जाता है। ऐसा ही एक मामला नोएडा के सेक्टर-5 के पास स्थित एक गांव के सरकारी स्कूल में सामने आया। 13 वर्षीय कवि (परिवर्तित नाम) ने बताया कि उसका परिवार मूल रूप से बिहार का रहने वाला है और वे लोग नोएडा में किराए के मकान में रहते हैं। वह पास के एक सरकारी स्कूल में पढ़ता है और इस समय छठी कक्षा में शिक्षा प्राप्त कर रहा है। कवि के अनुसार स्कूल का माहौल ठीक नहीं है और अक्सर छोटी-छोटी बातों पर बच्चों के बीच झगड़े हो जाते हैं। कवि ने बताया कि दो दिन पहले स्कूल की छुट्टी के समय सभी बच्चे अपने-अपने घर जा रहे थे। उसी दौरान सातवीं कक्षा में पढ़ने वाले फारूक (परिवर्तित नाम) से गलती से दसवीं कक्षा में पढ़ने वाले मनी (परिवर्तित नाम) को धक्का लग गया। इस बात को लेकर दोनों के बीच बहस शुरू हो गई और फारूक गुस्से में मनी से गाली-गलौज करने लगा। जब बच्चे स्कूल के बाहर पहुंचे, तब मनी के कुछ दोस्त भी वहां आ गए और उन्होंने फारूक पर चाकू से हमला कर दिया। इस हमले में फारूक घायल हो गया और घटना के बाद हमलावर बच्चे तुरंत वहां से भाग गए। घटना देखकर कुछ बच्चों ने तुरंत स्कूल के प्रिंसिपल को इसकी जानकारी दी। इसके बाद स्कूल प्रशासन ने घायल फारूक को अस्पताल पहुंचाया, जहां उसका इलाज कराया गया। जब इस घटना की जानकारी फारूक के माता-पिता को मिली, तो उन्होंने पुलिस में शिकायत दर्ज करवाई। कवि ने यह भी बताया कि जब पुलिस मनी और उसके दोस्तों को पकड़ने के लिए पहुंची, तब तक वे सभी वहां से भाग चुके थे। उसके अनुसार स्कूल में कुछ बड़े बच्चों की शरारतों की वजह से माहौल खराब हो गया है। कई बच्चे अपने पास चाकू-छुरी जैसे हथियार रखते हैं और छोटी-सी बात पर झगड़ा होने पर उनका इस्तेमाल भी कर देते हैं।

कवि का कहना है कि कई बार अध्यापकों का ध्यान भी बच्चों की इन गतिविधियों पर नहीं जाता, जिससे ऐसी घटनाएं होने का खतरा बढ़ जाता है। घटना के बाद बताया जा रहा है कि कुछ बच्चों का नाम स्कूल से भी काट दिया गया है।

# सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने बैठक में रखी अपनी बात, अधिकारियों से किया सीधा संवाद

**बालकनामा रिपोर्टर आसिफ**

7 फरवरी को चेतना संस्था द्वारा एक स्टेकहोल्डर कंसल्टेशन का आयोजन किया गया, जिसमें सरकारी अधिकारियों और बाल संरक्षण से जुड़ी विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधि शामिल हुए। इस बैठक में बाल कल्याण समिति, चाइल्ड हेल्पलाइन (1098) और जिला बाल संरक्षण इकाई के सदस्य भी मौजूद रहे। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि महिला एवं बाल विकास विभाग की चेयरपर्सन डॉ. रश्मि सिंह (आईएएस) थीं। उनके कार्यक्रम में पहुँचने से वहाँ मौजूद बच्चों और प्रतिभागियों में विशेष उत्साह देखने को मिला। कार्यक्रम के दौरान डॉ. रश्मि सिंह ने बच्चों से बातचीत की और उनका हौसला बढ़ाया। उन्होंने कहा कि वे लंबे समय से बच्चों के हित में काम कर रही हैं और यह बहुत जरूरी है कि बच्चों की आवाज को सुना जाए। उन्होंने बच्चों और अधिकारियों के साथ संवाद करते हुए उन्हें अपने विचार खुलकर रखने के लिए प्रेरित किया। इस बैठक का संचालन चेतना संस्था के निदेशक संजय गुप्ता द्वारा किया गया। उन्होंने बच्चों के अधिकारों और उन पर होने वाले खर्च से जुड़े विषयों को समझाने के लिए एक रोचक क्विज भी आयोजित कराया। इस क्विज के माध्यम से उपस्थित बच्चों और प्रतिभागियों को बाल संरक्षण से जुड़ी संस्थाओं और उनके काम के बारे में नई जानकारी मिली। बैठक की एक खास बात यह रही कि इसमें झुग्गी बस्तियों के बच्चे स्वयं शामिल हुए और उन्होंने अपनी बात खुलकर रखी। इस दौरान चाइल्ड हेल्पलाइन (1098) के प्रतिनिधियों ने बताया कि उनकी टीम 24 घंटे बच्चों की सहायता के लिए काम करती है। उन्होंने अपने अनुभव साझा करते हुए बच्चों को हेल्पलाइन की कार्यप्रणाली भी समझाई। वहीं जिला बाल संरक्षण इकाई के अधिकारियों ने बताया कि उनकी टीम किस तरह बच्चों के अधिकारों की रक्षा करती है और जरूरतमंद बच्चों तक सहायता पहुँचाने के लिए लगातार काम करती है।

कार्यक्रम के दौरान बच्चों ने लैंगिक अपराधों से बच्चों का संरक्षण अधिनियम (पॉक्सो) और बाल मजदूरी जैसे गंभीर मुद्दों पर अपने द्वारा लिखे गए गीत भी प्रस्तुत किए। जिन बच्चों को अक्सर मंच नहीं मिल पाता, उन्हें यहाँ अपनी बात कहने और प्रस्तुति देने का अवसर मिला। बच्चों की प्रस्तुति ने वहाँ मौजूद सभी लोगों का ध्यान आकर्षित किया और उपस्थित लोगों ने तालियों के साथ उनका उत्साहवर्धन किया। बैठक के दौरान 10 वर्षीय आरव (परिवर्तित नाम) ने अपने सपने के बारे में बताते हुए कहा कि वह बड़ा होकर दिल्ली का मुख्यमंत्री बनना चाहता है, ताकि कोई भी बच्चा नाली या सड़क पर रहने को मजबूर न हो। उसकी इस बात पर वहाँ मौजूद सभी लोगों ने तालियां बजाकर उसका हौसला बढ़ाया।बालकनामा रिपोर्टर आसिफ से बातचीत में 15 वर्षीय साक्षी (परिवर्तित नाम) ने बताया कि वह पहले से चाइल्ड हेल्पलाइन और जिला बाल संरक्षण इकाई के बारे में जानती थी, लेकिन इस कार्यक्रम में आकर उसे इनके काम करने का तरीका और भी अच्छे से समझ में आया। वहीं 14 वर्षीय अमन (परिवर्तित नाम) ने कहा कि उसे यहाँ बहुत अच्छा लगा, क्योंकि यहाँ उसके साथ किसी तरह का भेदभाव नहीं किया गया और उसे अपनी बात रखने का मौका मिला। यह बैठक इस बात का उदाहरण है कि जब बच्चों को सही मंच और अवसर मिलता है, तो वे न केवल अपनी समस्याओं को सामने रखते हैं, बल्कि अपने सपनों और भविष्य के बारे में भी सकारात्मक सोच के साथ अपनी बात साझा करते हैं।

# कूड़े के ढेर के बीच बचपन

**बालकनामा रिपोर्टर अमित**
**बातूनी रिपोर्टर किशोर**

दिल्ली की एक बस्ती में रहने वाले 10 वर्षीय बालक किशोर (परिवर्तित नाम) ने अपनी समस्या साझा करते हुए बताया कि जिस जगह वह रहता है, वहाँ लगभग 100 से अधिक झुग्गियाँ हैं और उन्हीं के पास कूड़े का एक बड़ा ढेर लगा हुआ है। यह कूड़ा मुख्य रूप से बस्ती के लोग ही फेंकते हैं, जिसके कारण आसपास गंदगी फैली रहती है और बदबू से रहना मुश्किल हो जाता है। किशोर ने बताया कि घरेलू कचरे के अलावा लोग घरों का गंदा पानी और बचा हुआ भोजन भी उसी स्थान पर डाल देते हैं। इतना ही नहीं, अन्य स्थानों से भी गाड़ियाँ आकर यहाँ कूड़ा डाल जाती हैं और कचरे का ढेर और बढ़ जाता है। इस गंदगी के कारण बस्ती के कई बच्चे बीमार पड़ रहे हैं। बच्चे इसी कूड़े के आसपास खेलते हैं और बाद में उन्हें बुखार, खाँसी, डेंगू और मलेरिया जैसी बीमारियाँ हो जाती हैं। किशोर ने यह भी बताया कि अब तक बस्ती के लोगों ने इस समस्या को लेकर यहाँ के प्रधान से कोई ठोस शिकायत नहीं की है, जिसके कारण स्थिति जस की तस बनी हुई है। बच्चों की इच्छा है कि यहाँ डस्टबिन लगाए जाएँ और नियमित सफाई की व्यवस्था हो, ताकि लोग कूड़ा इधर-उधर फेंकने के बजाय सही जगह डालें और बस्ती साफ-सुथरी रहे। गंदगी के बीच जी रहे इन बच्चों की आँखों में चिंता साफ दिखाई देती है। यह समस्या केवल सफाई का मुद्दा नहीं है, बल्कि बच्चों की सेहत और उनके सुरक्षित भविष्य से जुड़ा गंभीर प्रश्न है, जिस पर समय रहते ध्यान देना जरूरी है।

# पानी के तेज बहाव से कट रही मिट्टी, बस्ती पर बढ़ रहा खतरा

**बातूनी रिपोर्टर आस्था व रिपोर्टर किशन**

सड़क एवं कामकाजी बच्चों से जुड़ी समस्याएँ कई बार बार-बार हल करने की कोशिश के बाद भी बनी रहती हैं। ऐसा ही एक मामला नोएडा के सेक्टर-76 के पास स्थित झुग्गी बस्तियों में देखने को मिला। जब पत्रकार बच्चों से मिलने बस्ती में पहुंचे, तो उन्होंने देखा कि बस्ती के बिल्कुल पास एक बड़ा नाला है और बस्ती की जमीन भी कुछ जगहों पर काफी नीचे है। बस्ती में रहने वाले 15 वर्षीय राहुल (परिवर्तित नाम) ने बताया कि इस इलाके में जितनी भी झुग्गी-बस्तियाँ हैं, वे सभी सरकारी जमीन पर बनी हुई हैं। बस्ती के पास से नाला गुजरता है, इसलिए पहले कई लोगों ने ढलान की तरफ अपनी झुग्गियाँ बना ली थीं। अब धीरे-धीरे कई लोग उस रास्ते के ऊपर भी झुग्गियाँ बनाने लगे हैं, जहां से लोग रोज आते-जाते हैं। राहुल ने आगे बताया कि यहां पाइपलाइन के जरिए पानी आता है, लेकिन पाइप का मुंह काफी बड़ा है, जिससे पानी बहुत तेज रफ्तार से निकलता है। सबसे बड़ी समस्या यह है कि उसे बंद करने का कोई तरीका नहीं है। जब भी पानी आता है, तो वह काफी देर तक यूँ ही बहता रहता है। इससे आसपास की मिट्टी कटकर नाले की तरफ बहने लगती है और बस्ती के लिए खतरा बढ़ता जा रहा है। उसने यह भी बताया कि कई लोगों के घरों तक पाइप का कनेक्शन नहीं दिया गया है, जिसके कारण भी पानी तेज बहाव से निकलता है। ऊपर से कुछ जगहों पर पाइप अंदर से भी फटा हुआ है, जिससे नीचे से लगातार पानी बहता रहता है। इसके कारण मिट्टी धीरे-धीरे कटती जा रही है और जमीन कमजोर होती जा रही है। राहुल के अनुसार बस्ती के लोग इस समस्या से काफी समय से परेशान हैं, लेकिन इस पर कोई जिम्मेदार व्यक्ति ध्यान नहीं दे रहा है। न ही कोई प्रधान या अधिकारी इस मामले को देखने आया है। आने वाले समय में यह समस्या और गंभीर हो सकती है। लोगों ने कई बार मिट्टी कटने से रोकने के लिए ट्रैक्टर से मिट्टी की ट्रॉलियाँ डलवाई हैं, लेकिन कुछ समय बाद फिर वही स्थिति हो जाती है और मिट्टी दोबारा कटने लगती है। बस्ती के लोग चाहते हैं कि इस समस्या का स्थायी समाधान निकाला जाए, ताकि उनकी झुग्गियों और रहने की जगह को भविष्य में किसी तरह का खतरा न हो।

**बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।**

# अफवाहों के डर से स्कूल नहीं जा पा रहे बच्चे

**बालकनामा रिपोर्टर आसिफ**

दिल्ली में इन दिनों बच्चा चोरी की अफवाहें तेजी से फैल रही हैं। सोशल मीडिया और कुछ न्यूज चैनलों पर ऐसी खबरें लगातार दिखाई जा रही हैं, जिससे लोगों के बीच डर का माहौल बन गया है। इस डर का असर अब बच्चों की पढ़ाई पर भी पड़ने लगा है। कई अभिभावक भय के कारण अपने बच्चों को स्कूल भेजने से हिचक रहे हैं। परीक्षा नजदीक होने के बावजूद कई बच्चे घरों में ही रहने को मजबूर हैं, जिससे उनकी पढ़ाई प्रभावित हो रही है। बालकनामा रिपोर्टर आसिफ ने इस बारे में 14 वर्षीय अंशु (परिवर्तित नाम) से बात की। अंशु ने बताया कि बच्चा चोरी की खबरों के कारण उसकी माँ उसे स्कूल जाने से मना कर रही हैं। उसने कहा कि उसकी छोटी बहन भी इन खबरों से बहुत डर गई है और घर से बाहर जाने में घबराती है।

बातचीत के दौरान एक अभिभावक ने भी अपनी चिंता जाहिर करते हुए कहा कि इन खबरों की वजह से लोग बहुत डरे हुए हैं। उन्हें समझ नहीं आ रहा कि कौन-सी खबर सही है और कौन-सी गलत। उनका कहना है कि सरकार और प्रशासन को इस मामले में साफ जानकारी देनी चाहिए, ताकि लोग सच्चाई जान सकें और अपने बच्चों को बिना डर के स्कूल भेज सकें।

कुछ लोगों का मानना है कि बिना पुष्टि की खबरों और अफवाहों को फैलाने से समाज में डर और भ्रम का माहौल बन जाता है। ऐसे समय में प्रशासन और पुलिस की ओर से सही और स्पष्ट जानकारी देना जरूरी होता है, ताकि लोग अफवाहों पर विश्वास न करें और स्थिति को सही तरीके से समझ सकें। यह स्थिति दिखाती है कि अफवाहें केवल डर ही नहीं फैलातीं, बल्कि बच्चों की शिक्षा और उनकी मानसिक स्थिति पर भी असर डालती हैं। इसलिए जरूरी है कि लोग बिना पुष्टि की खबरों को आगे न बढ़ाएँ और सही जानकारी पर ही भरोसा करें।

## सतर्कता से टली बच्चे के अपहरण की कोशिश

**ब्यूरो रिपोर्ट**

नोएडा के सेक्टर-53 के पास स्थित एक बस्ती में बच्चों से उनकी वर्तमान स्थिति के बारे में बातचीत के दौरान एक चिंताजनक घटना सामने आई। बस्ती में रहने वाले 10 वर्षीय तरुण (परिवर्तित नाम) ने बताया कि पिछले कुछ समय से यहां बच्चों की सुरक्षा को लेकर चिंता बढ़ रही है। उसके अनुसार पहले कुछ लोग बाबा का भेष बनाकर आते थे और बच्चों को बहलाने की कोशिश करते थे, लेकिन अब कुछ लोग सामान्य कपड़ों में आकर बच्चों को चॉकलेट या अन्य चीजों का लालच देकर अपने पास बुलाने की कोशिश करते हैं।

तरुण ने बताया कि लगभग तीन दिन पहले शाम करीब 5 बजे की बात है। बस्ती के पास एक हरे रंग की बिल्डिंग है। उसी बिल्डिंग में रहने वाला 3 वर्ष का एक छोटा बच्चा नीचे मिट्टी में खेल रहा था। उसकी माँ ऊपर घर के काम में व्यस्त थी और पिता काम पर गए हुए थे। तभी वहां एक सीएनजी टेंपो आकर रुका। टेंपो में दो लोग बैठे हुए थे–एक उसे चला रहा था और दूसरा पीछे बैठा था। कुछ देर तक वे लोग आसपास देखते रहे और जब उन्हें लगा कि बच्चे पर कोई ध्यान नहीं दे रहा है, तो वे उस छोटे बच्चे के पास गए और उसे किसी चीज का लालच देकर टेंपो में बैठाकर वहां से निकल गए।

इसी बीच बच्चे की माँ सीढ़ियों से नीचे अपने बच्चे को देखने आईं, लेकिन बच्चा वहां नहीं मिला। उन्होंने तुरंत शोर मचाया और बच्चे के पिता को फोन कर पूरी घटना बताई। यह सुनते ही पिता ने अपने परिचितों और रिश्तेदारों को आसपास बच्चे को ढूंढने के लिए कहा। जब पिता रास्ते में बच्चे की तलाश कर रहे थे, तभी उन्हें एक टेंपो दिखाई दिया। उन्होंने टेंपो को रुकवाया तो उसमें उनका बच्चा मौजूद था। टेंपो रुकते ही चालक भाग गया, लेकिन पीछे बैठा व्यक्ति पकड़ा गया। इसके बाद पिता ने आसपास के लोगों को बुलाया और उस व्यक्ति को पकड़कर पुलिस के हवाले कर दिया।

यह घटना सुनने के बाद पत्रकारों ने बच्चों को समझाया कि अगर कभी ऐसी कोई संदिग्ध स्थिति दिखाई दे या कोई अजनबी व्यक्ति उन्हें बहलाने की कोशिश करे, तो तुरंत अपने माता-पिता, आसपास के लोगों या भरोसेमंद बड़े लोगों को बताना चाहिए। साथ ही जरूरत पड़ने पर चाइल्ड हेल्पलाइन नंबर 1098 पर भी फोन किया जा सकता है, ताकि बच्चों को समय रहते मदद मिल सके और वे सुरक्षित रह सकें।

## झगड़े के बीच घायल हुआ मासूम

**बालकनामा रिपोर्टर अमृत,**
**बातूनी रिपोर्टर पायल**

घर में होने वाले झगड़े कभी-कभी बहुत बड़ा नुकसान कर देते हैं। ऐसी ही एक दुखद घटना पश्चिम दिल्ली की एक झुग्गी बस्ती से सामने आई है। वहाँ रहने वाली 14 वर्षीय बालिका पायल (परिवर्तित नाम) ने बताया कि उनके घर के पास रहने वाले माता-पिता के बीच किसी बात को लेकर कहासुनी शुरू हुई, जो धीरे-धीरे गंभीर झगड़े में बदल गई। झगड़े के दौरान घर में तनाव का माहौल बन गया और किसी का ध्यान इस बात पर नहीं रहा कि पास में एक छोटा बच्चा रसोई के पास खेल रहा था। उसी समय चूल्हे पर रखा गरम तेल अचानक नीचे गिर गया और बच्चा उसकी चपेट में आ गया, जिससे वह बुरी तरह झुलस गया। बच्चे की चीख सुनकर परिवार के लोग तुरंत वहाँ पहुँचे और उसे पास के अस्पताल ले जाया गया। डॉक्टरों ने तुरंत उपचार शुरू किया। डॉक्टरों के अनुसार बच्चे को जलने की चोटें आई थीं, लेकिन समय पर इलाज मिलने के कारण उसकी हालत अब खतरे से बाहर है, हालांकि उसका इलाज अभी जारी है। यह घटना हमें सोचने पर मजबूर करती है कि घर के झगड़ों का सबसे अधिक असर बच्चों पर पड़ता है। गुस्से और बहस के बीच अक्सर बड़ों को यह ध्यान नहीं रहता कि बच्चे आसपास मौजूद होते हैं। इसलिए परिवारों को आपसी मतभेद शांतिपूर्ण तरीके से सुलझाने चाहिए, ताकि बच्चों की सुरक्षा और भविष्य सुरक्षित रह सके।

## जहरीली हवा से जूझते बच्चे

**बालकनामा रिपोर्टर रिया**
**बातूनी रिपोर्टर अमृत**

बालकनामा अखबार की बातूनी रिपोर्टर रिया ने एक बेहद गंभीर समस्या की ओर ध्यान दिलाया है। उन्होंने बताया कि दिल्ली में इस समय प्रदूषण का स्तर बहुत अधिक बढ़ गया है, जो बड़े और बच्चों दोनों के लिए खतरनाक है, लेकिन इसका सबसे अधिक असर बच्चों पर पड़ता है। विशेषज्ञों के अनुसार बच्चे बड़ों की तुलना में तेज और अधिक बार सांस लेते हैं, इसलिए प्रदूषित हवा उनके शरीर में जल्दी प्रवेश करती है और इससे सांस संबंधी बीमारियाँ, खांसी, दमा और अन्य स्वास्थ्य समस्याएँ हो सकती हैं। रिया ने बताया कि प्रदूषण बढ़ने का एक बड़ा कारण दिवाली के दौरान फोड़े जाने वाले पटाखे हैं। इसके अलावा शादी समारोहों और बैंक्वेट हॉल में भी आतिशबाजी की जाती है, जिससे हवा में धुआँ और हानिकारक कण फैल जाते हैं। कई स्थानों पर खुले में जमा कूड़े में आग लगा दी जाती है, जिससे जहरीला धुआँ उठता है और वातावरण और

अधिक प्रदूषित हो जाता है। यह सब मिलकर हवा की गुणवत्ता को खराब कर देता है, जिसका सीधा असर बच्चों की सेहत पर पड़ता है। रिया ने सभी लोगों से अपील की है कि वे पटाखे जलाने से होने वाले नुकसान को समझें और बच्चों के स्वास्थ्य के बारे में सोचें। उनका कहना है कि हमें त्योहार खुशियों और सुरक्षित तरीके से मनाने चाहिए, ताकि किसी की सेहत पर बुरा असर न पड़े। साफ हवा हर बच्चे का अधिकार है, इसलिए प्रदूषण कम करने के लिए हम सभी को जिम्मेदारी निभानी चाहिए।

## आवारा कुत्तों से बच्चे हुए परेशान

**बातूनी रिपोर्टर अंजलि व रिपोर्टर किशन**

बस्तियों में रहने वाले सड़क एवं कामकाजी बच्चों को कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इनमें से एक बड़ी समस्या आवारा जानवरों की भी है। ऐसा ही एक मामला नोएडा के गांव बिसरख में सामने आया। यहां पत्रकार, 26 बच्चों के साथ 'बढ़ते कदम' बैठक कर रहे थे। बैठक के दौरान एक 9 वर्षीय बालिका सीमा (परिवर्तित नाम) बार-बार जल्दी जाने की बात कह रही थी और थोड़ी परेशान भी दिखाई दे रही थी। पहले लगा कि वह घर जाना चाहती है, लेकिन जब पत्रकार ने उसे बच्चों के बीच बुलाकर विस्तार से बात की, तो पता चला कि वह घर नहीं बल्कि अस्पताल जाने की जल्दी में थी। सीमा ने बताया कि कुछ दिन पहले उसे एक कुत्ते ने काट लिया था। उसने बताया कि वह अपने माता-पिता के साथ इस गांव में किराए के मकान में रहती है। उसके माता-पिता सुबह काम पर चले जाते हैं और बच्चे घर पर ही रहते हैं। सीमा पास के स्कूल में पांचवीं कक्षा में पढ़ती है। उसकी एक छोटी बहन रानी (परिवर्तित नाम) है, जिसकी उम्र करीब 6 वर्ष है और वह घर पर ही रहती है। सीमा ने आगे बताया कि एक दिन उसे बुखार था, इसलिए वह स्कूल नहीं गई और घर पर ही रुक गई। उसकी मां काम पर जाते समय दोनों बहनों को 20 रुपये देकर गई थीं और कहा था कि इससे कुछ खाने की चीज ले लेना। कुछ देर बाद रानी पैसे मांगने लगी। सीमा के पास 20 रुपये का एक ही नोट था। उसे लगा कि अगर वह रानी को पैसे दे देगी तो वह पूरे पैसे की चीज खरीद लेगी और उसे कुछ नहीं मिलेगा। इसलिए उसने पैसे नहीं दिए और दोनों बहनें आपस में मस्ती करने लगीं। सीमा ने बताया कि उनकी गली के बाहर एक आवारा कुत्ता रहता है। वह अपनी बहन के साथ खेलते हुए गली में भाग रही थी और पीछे मुड़कर देख रही थी कि रानी आ रही है या नहीं। तभी अचानक सामने कुत्ता आ गया और वह उससे टकराकर गिर गई। उसी समय कुत्ते ने उसे काट लिया। सीमा रोने लगी तो पास में रहने वाले एक भैया उसे तुरंत सरकारी अस्पताल ले गए, जहां डॉक्टर ने उसे इंजेक्शन लगाया और दवाई दी। सीमा ने बताया कि उस कुत्ते ने सिर्फ उसे ही नहीं बल्कि बस्ती के कई और बच्चों को भी काटा है। बच्चों ने कई बार मिलकर उस कुत्ते को वहां से भगाने की कोशिश की, लेकिन वह भागता नहीं है। सीमा ने यह भी बताया कि पास की एक बिल्डिंग से एक आंटी रोज कुत्तों को खाना देने आती हैं। बच्चों ने उनसे भी कहा कि कुत्तों को यहां से हटा दें, क्योंकि वे कई बच्चों को काट चुके हैं, लेकिन उन्होंने कुत्तों को भगाने से मना कर दिया। बच्चों का कहना है कि अगर यह कुत्ता बस्ती से चला जाए तो वे ज्यादा सुरक्षित महसूस करेंगे। अभी जब भी बच्चे गली या बस्ती में खेलने आते हैं तो उन्हें डर बना रहता है कि कहीं कुत्ता फिर से काट न ले। इसी डर की वजह से कई बच्चे खुलकर खेल भी नहीं पाते।



बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

# मंच पर चमके नन्हे सितारे, निपुण मेले में बच्चों का दमदार प्रदर्शन

**बालकनामा रिपोर्टर दीपक**
**बातूनी रिपोर्टर लक्ष्मी**

शिक्षा विभाग के निर्देशन में आयोजित निपुण मेले में चेतना संस्था के विभिन्न शिक्षा केंद्रों से जुड़े सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने पहली बार भाग लेकर अपनी प्रतिभा का शानदार प्रदर्शन किया। जयपुर के विभिन्न ब्लॉकों से आसपास के सात सरकारी विद्यालयों के बच्चों ने भी सक्रिय भागीदारी निभाई। सभी बच्चों के लिए यह अनुभव नया, प्रेरणादायक और आत्मविश्वास बढ़ाने वाला रहा। निपुण मेले का मुख्य उद्देश्य बच्चों की साक्षरता और संख्यात्मक क्षमता यानी एफएलएन को मजबूत करना था। मेले में बच्चों ने पढ़ाई, रचनात्मक गतिविधियों और जीवन कौशल से जुड़ी विविध प्रस्तुतियों के माध्यम से सीखने और सिखाने की अनूठी झलक दिखाई। कुछ बच्चे ट्रैफिक लाइट बनकर सड़क सुरक्षा का संदेश देते नजर आए, तो कुछ ने पर्यावरण संरक्षण, हाथ धोने की सही आदत, अच्छा स्पर्श और बुरा स्पर्श, विलोम शब्द, आकृतियाँ, सप्ताह के नाम और गिनती जैसे विषयों को सरल और रोचक ढंग से समझाया। यह कई बच्चों का पहला मंच अनुभव था, जहाँ उन्होंने बिना झिझक बोलना, समझाना और प्रस्तुति देना सीखा। बालिका 12 साल की रमा (परिवर्तित नाम) ने बताया, 'मैं राजकीय माध्यमिक विद्यालय मांग्यावास में पढ़ती हूँ। इस कार्यक्रम में मैंने पर्यावरण चार्ट के माध्यम से स्वच्छ पर्यावरण के बारे में जानकारी दी, जिसके लिए मुझे प्रथम पुरस्कार मिला।' वहीं 10 साल की बालिका सुनीता (परिवर्तित नाम) ने ट्रैफिक लाइट बनकर सड़क सुरक्षा का प्रभावी संदेश दिया और सभी का ध्यान आकर्षित किया। कार्यक्रम के अंत में बच्चों की मेहनत और सहभागिता को सराहते हुए उन्हें पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया, जिससे बच्चों के चेहरे खुशी से खिल उठे। निपुण मेला बच्चों के लिए केवल एक आयोजन नहीं, बल्कि सीखने, अभिव्यक्ति और आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ने का एक मजबूत मंच साबित हुआ।

# बालक के कहने पर पिता विद्यालय से नाम कटवाने पर क्यों हुए मजबूर?

**बातूनी रिपोर्टर रितिक व रिपोर्टर किशन**

कई बार बड़े बच्चों का दबाव और डर छोटे बच्चों की पढ़ाई पर बुरा असर डालता है। ऐसा ही एक मामला नोएडा सेक्टर-76 के पास रहने वाले रमन (परिवर्तित नाम), उम्र 14 वर्ष ने बताया। रमन ने कहा कि उसका परिवार मूल रूप से बदायूं का रहने वाला है और वे लोग नोएडा सेक्टर-76 के पास एक गांव में किराए के मकान में रहते हैं। उसके माता-पिता इमारतों में काम करने के लिए जाते हैं। जिस बस्ती में वे रहते हैं, वहीं पास में एक सरकारी स्कूल है, जहां रमन पहले छठी कक्षा में पढ़ने जाता था। लेकिन अब उसने स्कूल जाना छोड़ दिया है। जब पत्रकारों ने उससे पूछा कि बिना किसी बड़ी वजह के उसने स्कूल क्यों छोड़ दिया, तो रमन ने अपनी परेशानी बताई। उसने कहा कि जिस स्कूल में वह पढ़ता था, वहां का माहौल ठीक नहीं था। स्कूल में कुछ बड़ी कक्षा के बच्चे पढ़ाई से ज्यादा लड़ाई-झगड़े में आगे रहते थे। वे छोटी-छोटी बातों पर झगड़ा करने लगते थे और कई बार बिना गलती के भी छोटे बच्चों को परेशान करते थे। रमन ने बताया कि एक दिन उनकी अध्यापिका को किसी जरूरी काम से बाहर जाना पड़ा। जाते समय उन्होंने कक्षा में बच्चों को शांति से बैठने के लिए कहा और रमन को जिम्मेदारी दी कि अगर कोई शरारत करे तो उसका नाम लिख ले। अध्यापिका के जाते ही कुछ बच्चे शरारत करने लगे, तो रमन ने उनके नाम लिख लिए। तभी एक 17 वर्षीय बड़ा बच्चा उसके पास आया और अपना नाम मिटाने के लिए कहने लगा, लेकिन रमन ने नाम नहीं मिटाया क्योंकि उसने सच में शरारत की थी। जब अध्यापिका वापस आईं तो रमन ने उन्हें पूरी बात बता दी। इसके बाद उस बच्चे को डांट पड़ी और उससे उठक-बैठक भी करवाई गई। इससे उसे काफी शर्म और गुस्सा आया। रमन के अनुसार उसी दिन स्कूल की छुट्टी के बाद उस बच्चे ने अपने बड़े दोस्तों के साथ मिलकर उसे बाहर पकड़ लिया और बहुत मारा। रमन ने बताया कि ऐसा उसके साथ केवल एक बार नहीं, बल्कि कई बार हुआ है। उसने यह भी कहा कि स्कूल में कुछ और बच्चों के साथ भी ऐसी घटनाएँ होती रहती हैं। रमन ने बताया कि जब वे इस बात की शिकायत अध्यापक-अध्यापिकाओं से करते थे, तो कई बार उनकी बात पर ध्यान नहीं दिया जाता था। बाद में उसने यह बात अपने पिता को बताई कि कुछ बच्चे छुट्टी के बाद उसे परेशान करते हैं और मारते हैं। यह सुनकर उसके पिता ने डर के कारण उसका नाम स्कूल से कटवा दिया। अब रमन घर पर ही रहता है और फिलहाल नन्हे परिंदे वैन में पढ़ने के लिए जाता है। बच्चों की बात सुनने के बाद पत्रकारों ने उन्हें सलाह दी कि वे ओपन बेसिक एजुकेशन के माध्यम से भी अपनी पढ़ाई जारी रख सकते हैं, जिसकी सुविधा चेतना संस्था के माध्यम से मिलती है। यह बात सुनकर बच्चे खुश हुए और उन्होंने आगे पढ़ाई जारी रखने का निर्णय लिया।

# खेलते समय तेज रफ्तार गाड़ी की टक्कर से बच्चा घायल, बच्चों में चिंता

**बालकनामा रिपोर्टर जहाना**

पश्चिमी दिल्ली में स्थित शकूर बस्ती समुदाय की बालकनामा रिपोर्टर जहाना ने अपने समुदाय के बच्चों के साथ एक बैठक आयोजित की। इस बैठक का उद्देश्य बच्चों की समस्याओं, उनके अनुभवों और समुदाय में होने वाली घटनाओं पर चर्चा करना था, ताकि समय रहते उन्हें आवश्यक सहायता और मार्गदर्शन दिया जा सके। बैठक के दौरान कुछ बच्चों ने एक बेहद संवेदनशील और चिंताजनक घटना साझा की।

बच्चों ने बताया कि उनके समुदाय में लगभग 8-9 वर्ष का एक बच्चा अपने साथियों के साथ खेल रहा था। खेलते-खेलते अचानक वह एक तेज रफ्तार गाड़ी से टकरा गया, जिससे उसे गहरी चोट लग गई घटना होते ही वहाँ मौजूद बच्चे घबरा गए और जोर-जोर से चिल्लाने लगे। बच्चों की आवाज सुनकर आसपास के लोग तुरंत मौके पर इकट्ठा हो गए। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए स्थानीय लोगों ने तुरंत घायल बच्चे के माता-पिता को इसकी सूचना दी।

बालकनामा रिपोर्टर जहाना ने इस घटना की सच्चाई जानने के लिए उस स्थान का भी निरीक्षण किया। वहाँ जाकर उन्होंने देखा कि सड़क पर जगह-जगह गड्ढे थे और रास्ता पूरी तरह समतल नहीं था। सड़क पर बड़े-बड़े पत्थर भी पड़े हुए थे। इसके अलावा रास्ता काफी सुनसान था, जिसके कारण वहाँ लोगों का आना-जाना भी बहुत कम था। सूचना मिलने के बाद बच्चे के माता-पिता ने उसे तुरंत प्राथमिक उपचार दिलवाया और उसकी देखभाल की व्यवस्था की। इस घटना ने बच्चों और समुदाय के लोगों को गहराई से प्रभावित किया। बैठक के दौरान बच्चों में डर, चिंता और असुरक्षा की भावना साफ दिखाई दे रही थी।

रिपोर्टर जहाना ने बच्चों को समझाया कि सड़क के पास खेलते समय बहुत सावधानी बरतनी चाहिए और यातायात नियमों का पालन करना सभी की सुरक्षा के लिए जरूरी है।

# लोगों के सहयोग से बस्ती के बच्चों के चेहरों पर खिलती है मुस्कान

**बातूनी रिपोर्टर शाहीन व रिपोर्टर किशन**

कहा जाता है कि इस दुनिया में हर इंसान से गलतियाँ होती हैं, लेकिन जो व्यक्ति अपनी गलतियों को सुधारने की कोशिश करता है और अच्छे काम करता है, वह दूसरों के जीवन में खुशी भी ला सकता है। जब कोई व्यक्ति दूसरों की मदद करता है और उनके साथ खुशी बाँटता है, तो कई चेहरों पर मुस्कान आ जाती है। ऐसा ही अनुभव नोएडा के सेक्टर-52 के पास स्थित बस्तियों में रहने वाले बच्चों ने साझा किया। बस्ती में रहने वाली 13 वर्षीया मोनिका (परिवर्तित नाम) ने बताया कि वह अपने परिवार के साथ इसी बस्ती में रहती है। यहाँ लगभग डेढ़ सौ से अधिक झुग्गियाँ और कुछ ईंट के मकान बने हुए हैं और बड़ी संख्या में बच्चे भी रहते हैं। बस्ती के पास ही सेक्टर और ऊँची-ऊँची इमारतें हैं। वहाँ रहने वाले कुछ लोग समय-समय पर बस्ती में आते हैं और बच्चों के लिए कई तरह की उपयोगी चीजें लेकर आते हैं। मोनिका के अनुसार जब वे लोग आते हैं तो बच्चों के लिए कपड़े, जूते-जुराब, पेंसिल, कॉपी-किताबें, रंग, नमकीन, बिस्किट और चिप्स जैसी चीजें लेकर आते हैं। जब बस्ती के बच्चों को ये सामान मिलता है, तो उनके चेहरों पर एक अलग ही खुशी दिखाई देती है। बच्चे खुशी से उछलने लगते हैं और उन्हें लगता है जैसे कोई खास अवसर मनाया जा रहा हो।मोनिका ने बताया कि कुछ दिन पहले एक दीदी उन्हें नया स्वेटर देकर गई थीं। उनके पास पहले कोई और स्वेटर नहीं था, इसलिए वह स्वेटर उनके बहुत काम आता है और सर्दी से बचाता है। इसके अलावा उन्हें कॉपी और किताबें भी मिली हैं, जिनका वह रोज पढ़ाई में इस्तेमाल करती हैं। बस्ती के कई बच्चों के लिए ये चीजें बहुत उपयोगी होती हैं, क्योंकि सभी परिवारों की आर्थिक स्थिति इतनी मजबूत नहीं होती कि वे बार-बार नई चीजें खरीद सकें।मोनिका ने यह भी बताया कि कई लोग अपने जन्मदिन के मौके पर भी बस्ती में आते हैं और बच्चों के साथ मिलकर उसे मनाते हैं। वे बच्चों के लिए खाने-पीने की चीजें और छोटे-छोटे उपहार लेकर आते हैं। उस समय बच्चों को ऐसा लगता है जैसे वे भी किसी त्योहार का हिस्सा बन गए हों। बच्चे खुश होकर गाने बजाते हैं और कभी-कभी अपने छोटे से डीजे पर संगीत चलाकर जन्मदिन का जश्न मनाते हैं। मोनिका के अनुसार इन पलों में बच्चों को यह महसूस होता है कि उनके समाज में ऐसे लोग भी हैं जो उनके साथ अपनापन रखते हैं और उनके बीच आकर खुशी बाँटते हैं। ऐसे छोटे-छोटे सहयोग से बच्चों के जीवन में बड़ी खुशी आती है और उनके चेहरों पर सच्ची मुस्कान दिखाई देती है।

**बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।**

# कम दाम में भरपेट भोजन, बस्ती के कामकाजी बच्चों के लिए बना सहारा

**रिपोर्टरः अमृत**
**बातूनी रिपोर्टः समीर और आदित्य**

दिल्ली शहर की बस्तीयों में रहने वाले कामकाजी बच्चों के लिए एक नई पहल उम्मीद की किरण बनकर सामने आई है। कम दाम में भरपेट और संतुलित भोजन देने वाली एक कैंटीन ने मेहनत करने वाले बच्चों के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाना शुरू कर दिया है। दिल्ली के एन-86 इलाके में जब बालकनामा के रिपोर्टर अमृत ने दौरा किया, तो उन्होंने देखा कि एक जगह बच्चों की लंबी लाइन लगी हुई है। लाइन में खड़े 11 वर्षीय समीर (परिवर्तित नाम) से बातचीत की गई। समीर ने बताया कि यहाँ सिर्फ 5 में भरपेट खाना मिल जाता है। उसने बताया कि दाल, चावल, रोटी, सब्जी और अचार जैसी चीजें भी इसी कीमत में मिल जाती हैं। समीर के अनुसार पहले जब यह कैंटीन नहीं थी, तब काम करके जो थोड़े पैसे मिलते थे, उनसे थोड़ा-बहुत ही खाना खा पाते

थे और कई बार पेट भी नहीं भरता था। अब यहाँ कम पैसे में ही भरपेट भोजन मिल जाता है। समीर के साथ खड़े 13 वर्षीय आदित्य (परिवर्तित नाम) ने भी बताया कि पहले कई बार उन्हें आधा पेट खाना खाकर ही काम पर जाना पड़ता था। लेकिन अब इस कैंटीन की वजह से उन्हें पूरा खाना मिल जाता है। उसका कहना है कि अब पेट भरने से शरीर में ताकत भी रहती है और काम करने में भी मन लगता है। जब रिपोर्टर अमृत ने इस बारे में और जानकारी जुटाई, तो पता चला कि यह कैंटीन खास तौर पर बस्ती में रहने वाले कामकाजी बच्चों और जरूरतमंद परिवारों के लिए शुरू की गई है। दोपहर होते ही यहाँ बच्चों और लोगों की लंबी कतार लग जाती है। कैंटीन के संचालकों का कहना है कि उनका उद्देश्य केवल सस्ता खाना उपलब्ध कराना नहीं है, बल्कि बच्चों के स्वास्थ्य को बेहतर बनाना भी है। कैंटीन में साफ-सफाई का भी विशेष ध्यान रखा जाता है और खाने में दाल, चावल, रोटी, सब्जी और अचार जैसी संतुलित चीजें दी जाती हैं, ताकि बच्चों को जरूरी पोषण मिल सके। स्थानीय लोगों का भी कहना है कि इस पहल से बच्चों की सेहत में सुधार दिखाई देने लगा है। पहले कई बच्चे कमजोरी और थकान की शिकायत करते थे, लेकिन अब नियमित और भरपेट भोजन मिलने से उनके चेहरे पर अलग ही खुशी दिखाई देती है।

# बाल श्रम से जूझ रहा बचपन

**बालकनामा रिपोर्टर जहाना**

देश की राजधानी दिल्ली के पश्चिमी क्षेत्र में स्थित शकूर बस्ती इलाके में बालकनामा रिपोर्टर जहाना ने एक विशेष दौरा किया। इस दौरान उन्होंने समुदाय के बच्चों और स्थानीय लोगों से बातचीत कर उनके जीवन की वास्तविक परिस्थितियों को समझने का प्रयास किया। बातचीत के दौरान यह सामने आया कि इस क्षेत्र में कई बच्चे गरीबी के कारण कम उम्र में ही काम करने को मजबूर हैं।

इसी दौरान उन्हें एक 13 वर्षीय बालक मोहन (परिवर्तित नाम) के बारे में जानकारी मिली, जो रोजाना चप्पल बनाने वाली एक फैक्ट्री में काम करने जाता है। यह जानने के बाद रिपोर्टर जहाना ने उस बच्चे से मुलाकात की और उसकी स्थिति को विस्तार से समझा। बालक ने बताया कि उसके परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत कमजोर है। उसके पिता गंभीर रूप से बीमार हैं और काम करने की स्थिति में नहीं हैं। घर की जिम्मेदारी उसकी माँ पर है, जो घरेलू काम करके कुछ कमाई करती हैं, लेकिन उनकी आय बहुत कम है। घर की खराब आर्थिक हालत के कारण मोहन को कम उम्र में ही अपनी पढ़ाई छोड़नी पड़ी। वह पहले पास के एक सरकारी स्कूल में पढ़ता था और पढ़ाई में अच्छा भी था, लेकिन परिवार की जरूरतों को देखते हुए उसे मजबूरी में काम करना पड़ा। फैक्ट्री में वह रोज लगभग 8 से 10 घंटे तक काम करता है, जहाँ उसे चप्पल बनाने, जोड़ने और पैक करने जैसे काम करने पड़ते हैं। इस मेहनत के बदले उसे बहुत कम मजदूरी मिलती है, जिससे घर का राशन और जरूरी सामान ही मुश्किल से खरीदा जा पाता है। मोहन ने अपनी भावनाएँ साझा करते हुए बताया कि उसका मन आज भी स्कूल जाने, पढ़ने और आगे बढ़ने का करता है। वह भविष्य में डॉक्टर या शिक्षक बनना चाहता है, ताकि अपने परिवार की मदद कर सके और समाज के लिए कुछ अच्छा कर सके। लेकिन गरीबी और मजबूरी के कारण उसके सपने अधूरे रह गए हैं।

रिपोर्टर जहाना ने इस मामले को गंभीरता से लेते हुए स्थानीय सामाजिक संस्थाओं, शिक्षकों और अभिभावकों से बातचीत की और बच्चों को फिर से शिक्षा से जोड़ने तथा उनके परिवारों को आर्थिक सहायता दिलाने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने यह भी बताया कि बाल श्रम कानून के अनुसार 14 वर्ष से कम उम्र के बच्चों से काम कराना अपराध है और ऐसे मामलों में सख्त कार्रवाई की जानी चाहिए। रिपोर्टर जहाना का कहना है कि यदि समाज मिलकर ऐसे बच्चों की शिक्षा, सुरक्षा और बेहतर भविष्य के लिए प्रयास करे, तो कई बच्चों का जीवन बदला जा सकता है और वे भी अपने सपनों को पूरा कर सकते हैं।

# शादी-बारात की चकाचौंध में छिपी है छतरी पकड़ते कामकाजी बच्चों की मजबूरियाँ

**बातूनी रिपोर्टर आदित्य व रिपोर्टर किशन**

शादी-बारात का सीजन शुरू होते ही शहरों में टेंट, लाइट और डीजे की चहल-पहल बढ़ जाती है। जब भी कोई बारात रास्ते से गुजरती है या कहीं डीजे की आवाज सुनाई देती है, तो बच्चे उत्सुकता से उसे देखने के लिए रुक जाते हैं। लेकिन कई बच्चे ऐसे भी होते हैं जो इन बारातों में छोटे-मोटे काम करके कुछ पैसे कमाने की कोशिश करते हैं। पत्रकारों ने नोएडा के सेक्टर-52 के पास चार बच्चों से बातचीत की। बच्चों ने बताया कि उनकी झुग्गी बस्ती के पास एक सरकारी बारात घर है, जहां अक्सर शादियां होती रहती हैं। यहां कई बच्चे अलग-अलग काम करते हैं, जैसे खाना बांटना, बर्तन धोना, टेंट लगाने में मदद करना और बारात में लाइट वाली छतरी पकड़ना। बातचीत के दौरान 16 वर्षीय बालक राधे (परिवर्तित नाम) ने बताया कि 'पैसा किसे प्यारा नहीं लगता। मेहनत तो हर काम में करनी पड़ती है, लेकिन जब कम समय में कुछ पैसे मिल जाते हैं तो अच्छा लगता है।' उसने बताया कि जब भी पास के बारात घर में बारात आती है, तो वह और उसके दोस्त डीजे के पास देखने के लिए चले जाते हैं। कई बार लाइट की छतरी पकड़ने वालों की कमी हो जाती है, तब लोग आसपास खड़े बच्चों से पूछ लेते हैं। ऐसे में वे छतरी पकड़ने के लिए तैयार हो जाते हैं। अब तो वे खुद ही जाकर पूछ लेते हैं कि अगर जरूरत हो तो वे यह काम कर सकते हैं। बालक ने बताया कि बारात जब तक बारात घर या लड़की के घर तक नहीं पहुंचती, तब तक लगभग डेढ़ से दो घंटे तक छतरी पकड़कर चलना पड़ता है। इस काम के बदले उन्हें लगभग 400 से 500 रुपये तक मिल जाते हैं। हालांकि

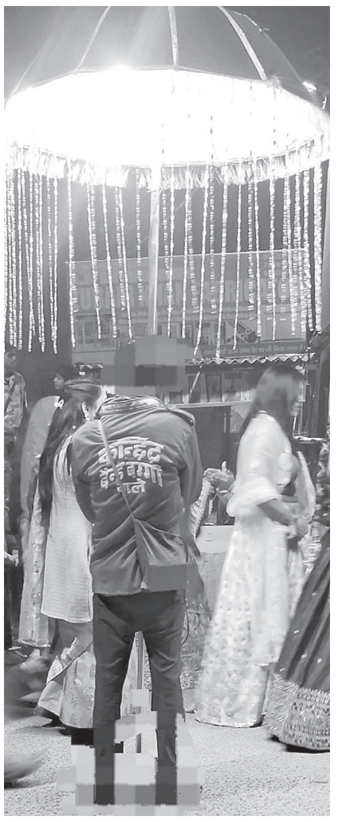

इस काम में कुछ परेशानियां भी होती हैं। जब बाराती लोग पैसे लुटाते हैं तो कई लोग और बच्चे उन पैसों को उठाने के लिए दौड़ पड़ते हैं। उस समय कई बार उनका हाथ छतरी से भी टकरा जाता है, जिससे छतरी गिरने या बल्ब टूटने का डर रहता है। कभी-कभी बल्ब टूट भी जाते हैं और उसके पैसे भी उन्हीं को भरने पड़ते हैं। उसने यह भी बताया कि कई बार कुछ लोग शराब पीकर छतरी को जानबूझकर हिलाते हैं और बच्चों को परेशान करते हैं। ऐसे समय पर वे कुछ कह भी नहीं पाते, क्योंकि डर रहता है कि कहीं वे मारपीट न करने लगें और मेहनत के पैसे भी न मिलें। इसलिए कई बार उन्हें यह सब सहना पड़ता है। हालांकि बच्चों के अनुसार इस काम में कुछ फायदे भी होते हैं। जब बारात में पैसे लुटाए जाते हैं तो कभी-कभी एक-दो नोट उनके हाथ भी लग जाते हैं। इसके अलावा बारात घर में उन्हें खाना खाने का मौका भी मिल जाता है। जब बारात लड़की के घर या बारात घर तक पहुंच जाती है, तब उनका काम खत्म हो जाता है और उन्हें पैसे मिल जाते हैं। बच्चों ने बताया कि जो पैसे उन्हें मिलते हैं, वे अपने घर वालों को दे देते हैं, जिससे घर के खर्चों में थोड़ी मदद हो जाती है। हालांकि बच्चों का कहना है कि यह काम आसान नहीं है, लेकिन परिवार की मदद के लिए वे यह काम करने को मजबूर हो जाते हैं।

# नाराजगी के साथ बच्चों ने बताई अपनी बात

**पृष्ठ 4 का शेष**

यह नियम बना दिया है कि जब बच्चे सुबह स्कूल आते हैं, तो उन्हें खुद ही झाड़ू लगानी पड़ती है, कुर्सियां साफ करनी पड़ती हैं और कक्षा में लगे चार्ट-पोस्टर भी साफ करने पड़ते हैं। चीकू ने बताया कि जब उनकी सफाई की बारी आती है, तो वे यह काम कर लेते हैं, लेकिन सफाई करते समय उनके स्कूल के कपड़े गंदे हो जाते हैं। गंदे कपड़ों की वजह से वे अगले दिन स्कूल नहीं जा पाते। जब वे उसके अगले दिन स्कूल जाते हैं, तो अध्यापिका उन्हें डांटती हैं और कई बार मार भी पड़ जाती है। जब वे बताते हैं कि कपड़े गंदे हो गए थे, इसलिए स्कूल नहीं आ पाए, तब भी उनकी बात ठीक से नहीं सुनी जाती।चीकू ने यह भी बताया कि इस बात की जानकारी स्कूल की प्रिंसिपल मैम को भी है, लेकिन पिछले एक साल से ज्यादा समय हो गया है और अभी तक स्कूल में सफाई के लिए कोई कर्मचारी नहीं रखा गया है। बच्चों से ही यह काम करवा लिया जाता है, इसलिए इस समस्या पर कोई खास ध्यान नहीं दिया जा रहा है। यह बात सुनकर शायद आपको भी अच्छा नहीं लगेगा। बालकनामा के पत्रकारों का भी स्कूल प्रशासन से अनुरोध है कि बच्चों से इस प्रकार का काम न कराया जाए। बच्चों का मुख्य काम पढ़ाई करना है। इसलिए स्कूल में जल्द से जल्द सफाई के लिए कर्मचारी नियुक्त किए जाने चाहिए, ताकि बच्चों की पढ़ाई प्रभावित न हो और उन्हें ऐसी परेशानी का सामना न करना पड़े।

**CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS**

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

**Child line Number**
**1098**
**Police Helpline Number**
**100**

यह पत्र सीमित वितरण के लिए है इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं

बालकनामा अखबार को प्रकाशित करने में हमारी मदद करने के लिए एचसीएल फाउंडेशन तथा अजीम प्रेमजी फाउंडेशन का बहुत धन्यवाद। आप प्रकाशन में भी हमारी मदद कर सकते हैं। बालकनामा अखबार के प्रकाशन में आप भी सहयोग दे सकते हैं। संपर्क करें : info@chetnango.org

बढ़ते कदम , 31 , बेसमेंट , गौतम नगर , नई दिल्ली - 110049 द्वारा प्रकाशित। न्यूज़लेटर सीमित वितरण के लिए। बच्चों के चित्र उनकी अनुमति से प्रकाशित।
समर्थन के लिए संपर्क करें -editorbalaknama@gmail.com फोन - 41644471